₹15/-

★ वर्ष 43 ★ अंक 12 ★ दिसम्बर 2016

हँसती दुनिया

हँसती दुनिया

● वर्ष 43 ● अंक 12 ● दिसम्बर 2016 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

सी. एल. गुलाटी, प्रभारी पत्रिका विभाग

प्रकाशक एवं मुद्रक राधेश्याम ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9 हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II, नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org
kids.nirankari.org

Subscription Value

	India/ Nepal	UK	Europe	USA	Canada/ Australia
Annual	Rs.150	£15	€ 20	$25	$30
5 Years	Rs.700	£70	€ 95	$120	$140

Other Countries

Equivalent to U.S. Dollars as mentioned above.

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
9. अनमोल वचन
11. समाचार
20. वर्ग पहेली
28. पहेलियां
29. कभी न भूलो
44. पढ़ो और हँसो
46. जन्मदिन मुबारक
47. आपके पत्र मिले
48. रंग भरो परिणाम
50. चित्र पहेली

चित्रकथाएं

12 दादा जी
34 किट्टी

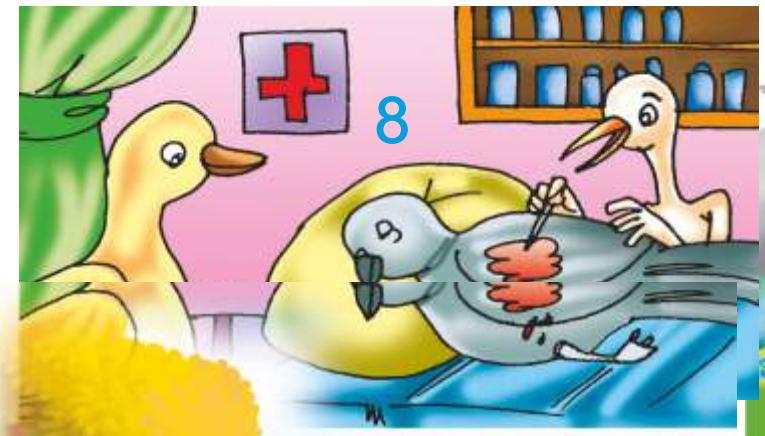

कहानियां

7. टिंकू को सीख मिली
: विपिन कुमार

16. सीख
: राजेन्द्र परदेसी

21. कालू कौआ और मयंक मोर
: हरजीत निषाद

31. सच्चा सम्मान
: राजकुमार जैन 'राजन'

कविताएं

6. किसान
: डॉ. परशुराम शुक्ल

17. खेलो खेल खेल–भाव से
: राधेलाल 'नवचक्र'

27. सूरज और हवा
: कमल सिंह चौहान

27. मिलकर सोचें
: डॉ. रामनिवास 'मानव'

43. साफ करो अपना घर–आंगन
: प्रियंका भारद्वाज

विशेष / लेख

10. सन्त निकोलस (सान्ताक्लॉज)
: पृथ्वीराज

18. अन्तरिक्षः जहाँ दिन में भी तारे दिखाई देते हैं...
: फेनम सोगानी

30. वायुमंडल में बढ़ती कार्बनडाइऑक्साइड
: कमल सोगानी

38. रोमांचक क्रिसमस लाइटिंग
: डॉ. विनोद गुप्ता

40. कैसे उड़ान भरते हैं परिन्दे?
: ईलू रानी

42. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
: डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल

सबसे पहले

आंकलन

संयम बहुत ही समझदार लड़का है। वह हमेशा कुछ न कुछ सीखना चाहता है। उसने अपने अध्यापक से पूछा– सर, हम हर वर्ष उल्लास और खुशी से नववर्ष मनाते हैं और उसका स्वागत भी करते हैं परन्तु कुछ ही दिनों में उस उल्लास, खुशी को हम भूल क्यों जाते हैं?

अध्यापक ने सभी बच्चों को इस प्रश्न का महत्व समझाया और उसका समाधान भी।

जिस प्रकार नववर्ष का आरम्भ हर वर्ष होता है। उसी प्रकार नववर्ष का समापन भी हर वर्ष होता ही है। हम समापन वर्ष नहीं मनाते परन्तु वर्ष के अन्त में हमें यह आंकलन अवश्य करना चाहिए कि हमने जो भी संकल्प, शुभकामनाएं की थी उनको हम कहाँ तक ले जा सके। हमने जिनकी भी शुभकामना की थी क्या वही शुभ भाव हमारे साथ अन्त तक बने रहे? शायद हमने समाज में प्रचलित एक नियम का पालन किया और समझा कि मैंने अपना कार्य पूरा कर लिया। परन्तु जिनको हमने शुभकामना दी थी उनके साथ कभी–कभी हमारा मनमुटाव भी हो जाता है और खुशी खो जाती है।

संकल्प भी हम इसलिए लेते हैं क्योंकि सभी कोई न कोई संकल्प ले रहा है कि इस नववर्ष में मैं यह करूँगा या कोई अमुक कार्य करूँगा। अगर हमने सच में हृदय से सबको शुभकामना, शुभभावना, प्रेमभावना का संदेश भेजा है और शुभ संकल्प लिए हैं तो वर्ष के समापन के समय हमें अपार प्रसन्नता ही होगी कि मेरे द्वारा किया हर कार्य सफल रहा।

प्यारे साथियों! हमें भी यह सोचना होगा कि हमने वर्ष के समापन पर क्या खोया, क्या पाया। अगर हमने पूरा वर्ष अपनी तुच्छ इच्छाओं को पूरा करने में व्यतीत किया अर्थात् खाया, पिया और खेल–कूद में समय गंवाया तो हमने अपने जीवन का मूल्यवान समय बहोशी में ही बिता दिया।

जीवन वही हो जाता है, जो हम जीवन के साथ करते हैं। अगर हम कोई सृजनात्मक कार्य करते हैं तो हमारा जीवन स्वयं सृजक बन जाता है। नहीं तो जीवन गतिहीन–सा दिखाई देने लगता है। यह सब कुछ हमारे स्वयं पर निर्भर है। संकल्प लेने वाला भी मैं ही हूँ, शुभकामना देने वाला भी मैं ही हूँ और इनको जीवन के आचरण में ढ़ालने वाला भी मैं ही हूँ अर्थात् मेरा आचरण ही मेरे आंकलन की कसौटी है।

वर्ष के अन्त में आज हमने स्वयं का आचरण की कसौटी पर अपना आंकलन करना है और इस शुभ भाव के साथ कि हम भविष्य में इस कसौटी पर खरे उतरेंगे।

– विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ : हरजीत निषाद

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या : 143

निरंकार नहीं नज़रीं आउंदा स्याणप ते चतुराईयां तों।
निरंकार नहीं नज़रीं आउंदा उच्चे इलम पढ़ाईयां तों।
निरंकार नहीं नज़रीं आउंदा लक्खां ही तदबीरां तों।
निरंकार नहीं नज़रीं आउंदा कर्म धर्म ज़ंजीरां तों।
निरंकार नहीं नज़रीं आउंदा कदे बनावट भेखां तों।
निरंकार नहीं नज़रीं आउंदा बांगां तों जां हेकां तों।
मेहर करे जे सन्त हरि दा हथ ते सरहों जमा सकदै।
अवतार गुरु जे पूरा रीझे परतख प्रभु दिखला सकदै।

भावार्थ :

उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि निरंकार–प्रभु सर्वव्यापी है। इसका कोई रूप, रंग, आकार नहीं है, यह निराकार (निरंकार) है। इस निरंकार प्रभु को देखने के लिए इन्सान अनेकों उपाय करता है लेकिन इसके दर्शन पूर्ण सद्गुरु की कृपा से ही हो सकते हैं, इन्सान की किसी स्याणप अथवा चतुराई से इसके दर्शन नहीं हो सकते। किसी ऊँचे इल्म या पढ़ाई से यह नज़र नहीं आता। लाखों उपाय करके भी यह नज़र नहीं आता और न ही कर्म–धर्म की जंजीरों से इसके दर्शन किए जा सकते हैं। अनेकों लोग अनेक प्रकार के भेष बना लेते हैं, भेष बनावट बनाने से यह निरंकार नज़र नहीं आता है। प्रभु–भक्ति में लगा सन्त यदि किसी व्यक्ति पर कृपा कर दे तो यह अनहोनी को होनी में बदल सकता है।

बाबा अवतार सिंह जी कह रहे हैं कि यदि पूर्ण गुरु (सद्गुरु) प्रसन्न हो जाए तो इस निरंकार–प्रभु को जो हमारे अंग–संग है, प्रत्यक्ष आमने–सामने दिखा सकता है।

भाव, इन्सान को अपनी चालाकियां–चतुराईयां, इल्म–पढ़ाईयां, कर्म–काण्ड और प्रयत्न–विधियों के अभिमान को त्यागकर सद्गुरु को रिझाना होगा तभी यह नज़र आने वाला निरंकार–प्रभु नज़र आयेगा, तभी यह नज़र में बस पायेगा।

मानवता का सच्चा सेवक,
श्रम से गहरा नाता।
सह कर सर्दी, गर्मी वर्षा,
फसलें सदा उगाता।।

गेहूँ, चावल, ज्वार, बाजरा,
जो कुछ घर में आता।
दालें, सब्जी और मसाले,
सब किसान उपजाता।।

दूर शहर से छोटे–छोटे,
गाँवों में यह रहता।
सहता जीवन भर अभाव पर,
कभी नहीं कुछ कहता।।

देश धर्म की रक्षा करता,
परम्परा का ज्ञाता।
नैतिकता को धर्म मानकर,
अपना धर्म निभाता।।

खुद रूखा सूखा खाता है,
सब जग को दे देता।
यही लिखा किस्मत में मेरी,
मन को समझा लेता।।

ईश्वर की इच्छा पर निर्भर,
है किसान की खेती।
कभी–कभी भोले किसान को,
यह भारी दुख देती।।

जीव जन्तु जंगल के पक्षी,
सब उत्पात मचाते।
ओले, सूखा अतिवर्षा भी,
फसल नष्ट कर जाते।।

भोला–भाला प्रकृति पुत्र यह,
समझ नहीं कुछ पाता।
फसल अगर बरबाद हुई तो,
बिना मौत मर जाता।।

मानव की सेवा करके यह,
मानव धर्म निभाता।
लेकिन बदले में मानव से,
कभी नहीं कुछ पाता।।

इसके बारे में कुछ सोचो,
सत्ता को समझाओ।
श्रम–साधक सच्चे मानव का,
जीवन सफल बनाओ।।

बाल कहानी : विपिन कुमार

टिंकू को सीख मिली

टिंकू कबूतर और बंटी बतख आपस में पड़ोसी थे। दोनों का घर बिल्कुल आसपास था। टिंकू कबूतर ने एक पुराने खंडहर की खिड़की में अपना घोंसला बनाया था। जबकि बंटी बतख अपने छोटे से दरबे में रहता था। दोनों प्रायः बगल के पीपल वाले पेड़ के नीचे मिलते। एक दूसरे का हालचाल पूछते और चलते बनते। यह सिलसिला कई माह से चल रहा था।

इधर कुछ दिनों से बंटी बतख को टिंकू कबूतर के व्यवहार में कुछ असहजता दिखने लगी थी। उसे लगता कि टिंकू अहंकार भरी बातें करता है। टिंकू की बातें सुनकर भी बंटी कुछ नहीं बोलता।

एक दिन जब बंटी बतख दोपहर में तेज धूप से बचने के लिए पीपल की छाया में आया तो पहले से विश्राम कर रहे टिंकू कबूतर ने उसे देखते ही अपना मुँह फेर लिया। बंटी द्वारा इसका कारण पूछने पर वह घमण्ड से बोला– मैं तुम जैसों से बातें नहीं करना चाहता। तुम बतखों की भी कोई जाति होती है। अरे, जो उड़ नहीं सकता है, वह पक्षी किस बात का? तुम लोग पक्षी के नाम पर कलंक हो! तुम्हारे पंख एवं पांव कितने भोंड़े हैं। मछली–मेंढ़कों की तरह पानी में तैरना भी कोई गुण है।

इतना बोलकर टिंकू ने जोरदार ठहाका लगाया। उसके ठहाके की आवाज सुनकर पेड़ पर बैठे कौए, मैना, तोते एवं बटेर भी हँसने लगे। सभी ने टिंकू की 'हाँ' में 'हाँ' मिलाई। कुछ पक्षी तो मुँह बनाकर बंटी बतख को चिढ़ाने लगे। उनके इस तरह के दुर्व्यवहार से बंटी बतख को काफी दुःख हुआ। किन्तु उसने समझदारी से काम लिया। वह चुपचाप अपने घर की ओर चल पड़ा।

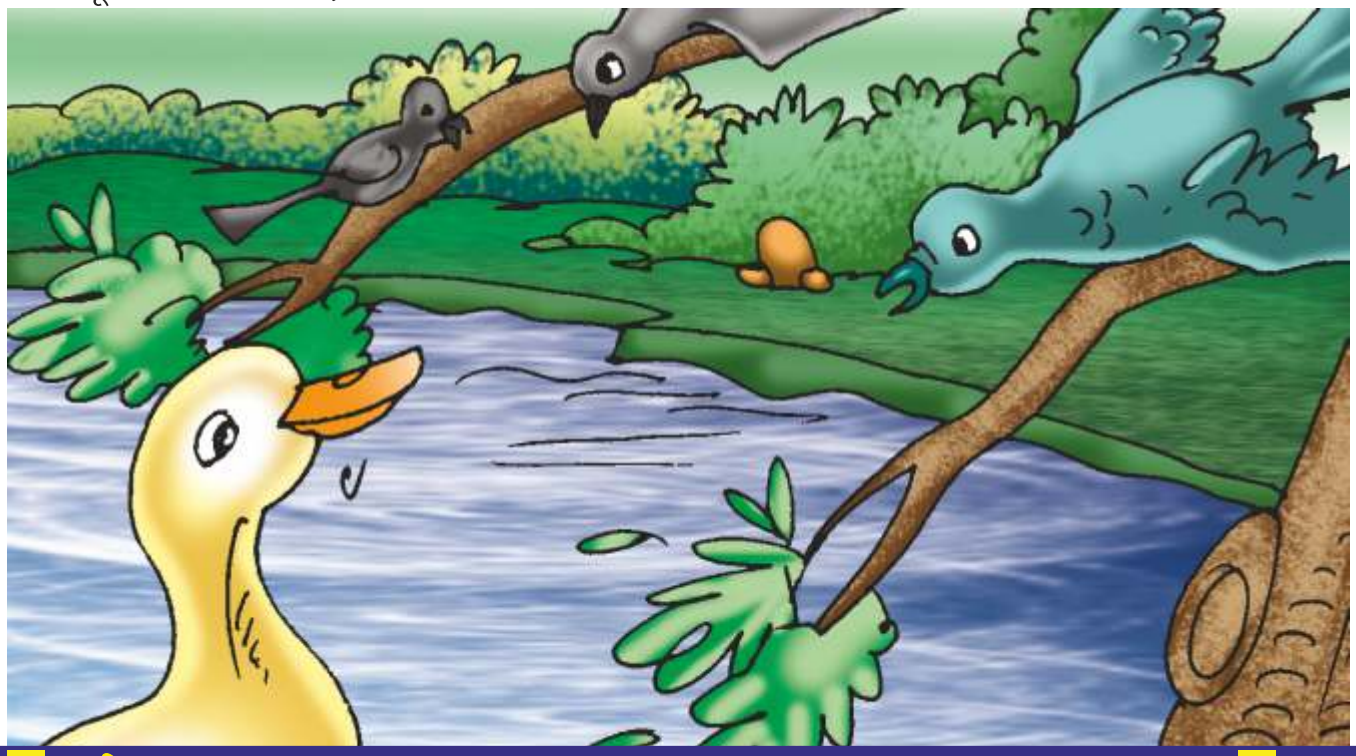

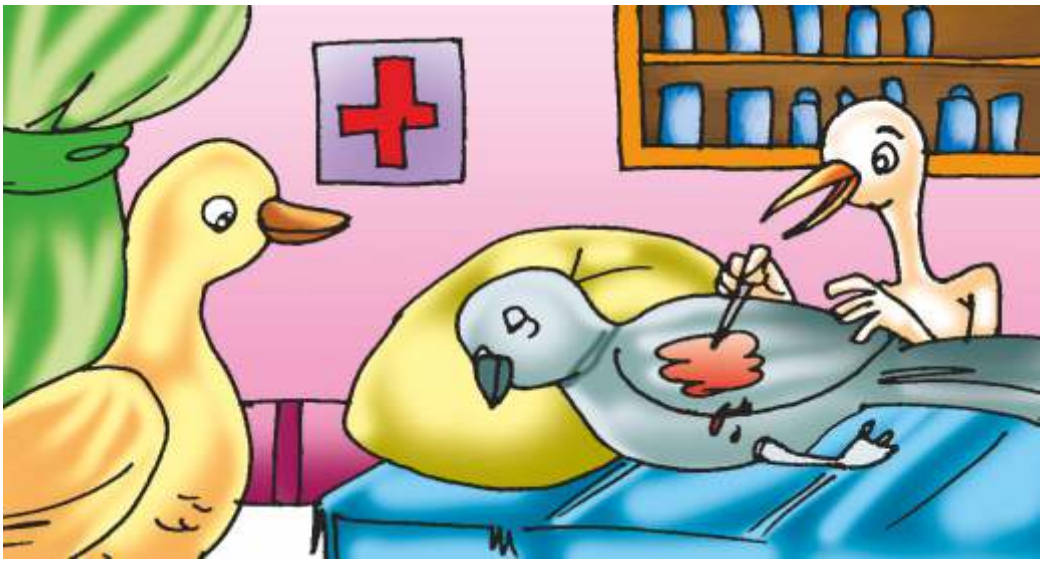

दिन–रात टिंकू की सेवा करता रहता। अस्पताल से निकलते वक्त टिंकू कबूतर की आंखें भीगी थीं। उसे बंटी बतख के साथ किये अपने दुर्व्यवहार पर पछतावा हो रहा था। वह हाथ जोड़कर बंटी बतख से क्षमा मांग रहा था।– मित्र, यदि तुम मेरी सहायता नहीं करते तो मैं तो तड़प–तड़पकर मर ही जाता। मुझे माफ कर दो। इस संसार में सबकी अपनी उपयोगिता है यह मुझे सीख मिल गई है।

बंटी बतख ने हल्के से टिंकू कबूतर की पीठ ठोंक दी– 'अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखना....।'

सुनकर टिंकू कबूतर ने आभार में अपना सिर झुका लिया।

कई दिन बीत गये। बंटी बतख पास वाले तालाब में तैर रहा था। कुछ और बतख भी उसके साथ थे। वे आपस में हँसी मजाक कर रहे थे। अचानक कहीं से फटाक की जोरदार आवाज सुनाई दी। बंटी बतख और उसके साथी कुछ समझ पाते कि बगल में 'छपाक' की आवाज सुनकर वे चौंके।

–अरे, एक घायल कबूतर!– एक युवक बतख ने कहा– इसके शरीर से खून निकल रहा है। शायद इसे शिकारी की गोली लगी है।

–यह तो टिंकू कबूतर है। इसका यह बुरा हाल!– बंटी बतख ने कहा– चलो, इसे मोनू बगुले के क्लीनिक में ले चलते हैं।

बंटी बतख उसे अपनी पीठ पर लादकर मोनू बगुले की क्लीनिक में ले गया। उसके अन्य बतख साथी भी साथ थे। टिंकू कबूतर आठ दिनों तक मोनू बगुले की क्लीनिक में भर्ती रहा। इस बीच बंटी बतख

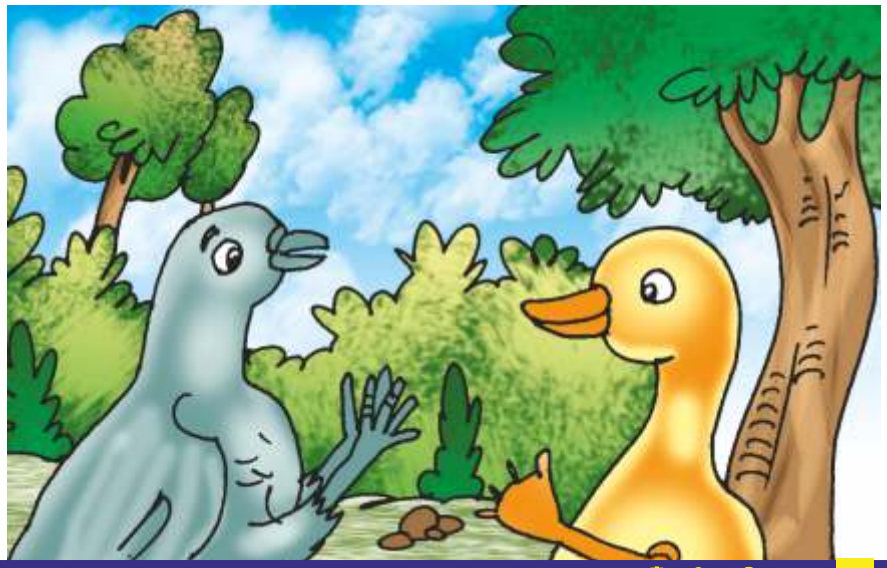

अनमोल वचन

★ महापुरुषों की शिक्षाओं को हम जीवन में अपनाएं तो हमारे विचार सुन्दर बनेंगे तब हम सुख और प्रसन्नता महसूस करेंगे।

★ ब्रह्मज्ञान से बढ़कर कोई दौलत नहीं है।

★ महान वही है जो महान गुरुओं अवतारों के आदेशों को अपने जीवन में ढालता है। उन महापुरुषों की महानता का केवल वर्णन करने से कोई महान नहीं बन सकता। वे हमारे महापुरुष महान तो थे ही वे हमारी ज्यादा महिमा गाने से, ज्यादा महान या कम महान नहीं हो जायेंगे। हमें उनके आदेशों पर चलकर स्वयं महान बनना है।

★ जिसमें दास भावना है, धर्म के क्षेत्र में वही ऊँचा माना जा सकता है।

★ हीरा कभी यह नहीं कहता कि मैं बहुत कीमती हूँ। उसके गुण ही उसको कीमती बना देते हैं। इसी प्रकार से भक्त कभी अपने आपको ऊँचा नहीं कहता। उसका गुण ही उसको ऊँचा बना देता है।

★ सहनशीलता भक्त का सबसे अच्छा गुण है।

★ विद्या के साथ जीवन का आदर्श ऊँचा न हुआ तो पढ़ना व्यर्थ है।

★ हमें जो भी चाहे मुस्कुराहट के बल से प्राप्त करना चाहिए न कि तलवार से।

★ सही उत्तर एक ही होता है उसे चाहे एक व्यक्ति बताए या एक करोड़।

★ दूसरों को पहुँचाये गये दुःख की मैल गंगा भी नहीं धो सकती।

★ परमात्मा को रिझाना तभी सम्भव है, जब हम इन्सानों को भी अपनाएं।

★ हम, महापुरुषों का नाम लेते हैं। उनकी पूजा करते हैं। हम उनको मानने तक सीमित न रहकर उनकी (बात) भी मानें।

★ अगर किसी को मरता–कुचलता देखकर अपने मन में खुशी महसूस करते रहेंगे तो हम धार्मिक नहीं है।

– बाबा हरदेव सिंह जी महाराज

क्रिसमस पर विशेष

जानकारी : पृथ्वीराज

सन्त निकोलस (सान्ताक्लॉज)

बच्चों! प्रतिवर्ष दुनियाभर में क्रिसमस का त्योहार बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। क्रिसमस के अवसर पर कोई व्यक्ति सान्ताक्लॉज बनकर मिठाइयां बांटता है। इस कहानी में हम सान्ताक्लॉज की जानकारी दे रहे हैं।

निकोलस एक अमीर आदमी का लड़का था। एक दिन वह अपने शहर की एक गली में से गुजर रहा था। उसने एक घर में रोने की आवाज सुनी। आवाज सुनकर निकोलस रूक गया।

एक लड़की बड़े जोर–जोर से रोती हुई कह रही थी– दो दिन हो गये, खाने को कुछ नहीं मिला। यूँ कब तक हम भूखे रहेंगे? अब तो एक ही तरीका बचा है कि सड़क पर जाकर भीख माँगें और किसी तरह पेट भरें।

उसी समय निकोलस ने एक आदमी को कहते सुना– 'अभी नहीं पुत्री, आज रात धीरज करो। मैं प्रभु से प्रार्थना करूँगा कि हमें भीख न माँगनी पड़े।'

निकोलस को यह सुनकर बड़ा दुःख हुआ कि इस परिवार के पास खाने तक को नहीं है। उसने सोचा कि इनकी मदद करनी चाहिए।

यह सोचता हुआ निकोलस घर पहुँचा। जब काफी रात हो गई तो उसने अपना खजाना खोला। खजाने में सोने की तीन छड़ें थीं। वह एक छड़ लेकर उस व्यक्ति के घर गया। सब सो रहे थे। दरवाजे बन्द थे। उसने देखा कि एक खिड़की खुली हुई है। खिड़की ऊँचाई पर थी। पंजों के बल खड़े होकर उसने चुपके से सोने की छड़ भीतर गिरा दी।

जब व्यक्ति सवेरे उठा तो सोने की छड़ देखकर बहुत खुश हुआ। जल्दी से अपनी लड़कियों को जगाया और बोला– 'देखो! ईश्वर ने हमारी प्रार्थना सुन ली। अब हमें भूखों नहीं मरना होगा। भीख नहीं माँगनी होगी। हमारी इज्जत बच गई।' लड़कियां भी बहुत खुश हुईं।

निकोलस दूसरी रात भी आया और पहले की तरह चुपके से उसने दूसरी छड़ भी कमरे में डाल दी। लेकिन तीसरे दिन जब वह छड़ गिरा रहा था, तो उस व्यक्ति ने उसे देख लिया। भगवान का भेजा हुआ दूत समझकर वह निकोलस के पैरों पर गिर पड़ा।

उस व्यक्ति को प्यार से उठाकर निकोलस बोला– 'मेरे पैरों पर मत पड़ो। प्रभु को धन्यवाद दो, क्योंकि तुम्हारी प्रार्थना सुनकर उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा था।'

निकोलस इसी तरह चुपके–चुपके गरीबों की मदद करने लगा। धीरे–धीरे लोग उसे सन्त निकोलस कहने लगे।

अब सन्त निकोलस का ही नाम बदलकर 'सान्ताक्लॉज' हो गया है। लोग कहते हैं कि सान्ताक्लॉज हर साल क्रिसमस के दिन बच्चों को उपहार बाँटने आते हैं और रात को उनके मोजों में खिलौने और मिठाइयां रख जाते हैं।

क्रिसमस ईसाइयों का सबसे बड़ा त्योहार है। इसी दिन प्रभु ईसा मसीह का जन्मदिन मनाया जाता है।

क्रिसमिस पर क्रिसमस–ट्री सजाया जाता है। कई लोग 'सान्ताक्लॉज' बनकर बच्चों को उपहार बाँटते हैं।

समाचार

पृथ्वी पर 4.1 अरब वर्ष पहले हुई थी जीवन की शुरूआत

लास एंजिल्स। पूर्व के दस्तावेजों के अनुसार हमारे ग्रह पर 30 करोड़ वर्ष पहले जीवन की शुरूआत होने की बात कही गई थी लेकिन नये अनुसंधान में नये तथ्य सामने आए हैं कि पृथ्वी पर जीवन की शुरूआत कम से कम 4.1 अरब वर्ष पहले हुई थी।

'यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया' 'लास एंजिल्स' के अनुसंधानकर्ताओं की खोज में इस बात के संकेत मिले हैं कि 4.54 अरब वर्ष पहले ग्रह के अस्तित्व में आने के बाद ही जीवन की शुरुआत हो गई थी। 'यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया' में भू–रसायन के प्रोफेसर मार्क हैरिसन के अनुसार 'पृथ्वी पर जीवन की शुरूआत लगभग तत्काल हो गई थी। उचित अवयवों के कारण ऐसा प्रतीत होता है कि जीवन की शुरुआत बहुत जल्द हो गई थी।'

अनुसंधान के सह लेखक पैट्रिक बोयंके ने कहा, 'यदि बमबारी के दौरान पृथ्वी पर जीवन पूरी तरह समाप्त हो गया तो भी एक बार फिर जीवन की शुरुआत बहुत जल्द हो गई थी।' एलिजाबेथ बेल के नेतृत्व में किए गए इस अनुसंधान में अनुसंधानकर्ताओं ने 10,000 से अधिक जिक्रोनों का अध्ययन किया जिनका निर्माण पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया की पिघली हुई चट्टानों या मैग्मा से हुआ था। (भाषा)

सौरमंडल में है तीन सूर्य वाला विशाल ग्रह जहां तीन बार होता है सूर्योदय व सूर्यास्त

वॉशिंगटन। वैज्ञानिकों ने एक नये विशाल ग्रह का पता लगाया है। यह हमारे सौरमंडल के सबसे बड़े ग्रह बृहस्पति से भी चार गुना विशाल है। यह तीन सूर्यों की परिक्रमा करता है। इस पर हर रोज तिहरा यानी तीन बार सूर्योदय और तीन बार सूर्यास्त होता है। एचडी 131399एबी नामक यह ग्रह पृथ्वी से करीब 340 प्रकाश वर्ष दूर है। इसकी उम्र करीब 1.6 करोड़ साल है। यह अब तक खोजे गए नये ग्रहों में सबसे कम उम्र वाला ग्रह बन गया है। इस पर तापमान करीब 580 डिग्री सेल्सियस आंका गया है, जबकि इसका वजन चार बृहस्पति ग्रहों के बराबर है। हालांकि यह सबसे ठंडों ग्रहों में माना गया है।

यूनिवर्सिटी ऑफ एरिजोना के असिस्टेंट प्रोफेसर डेनियल अपाई ने कहा कि एचडी 131399एबी के बारे में कई रोचक जानकारी मिली हैं।

(संग्रहकर्ता : बबलू कुमार)

दादा जी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

एक बार की बात है। राजा कृष्णदेव की माँ की तबियत काफी खराब थी। वह मरने से पहले आम दान करना चाहती थीं। परन्तु ऐसा करने से पहले ही उसकी मृत्यु हो गई।

राजा को बहुत दुख हुआ। उन्होंने ब्राह्मणों को बुला कर अपनी माता की अंतिम अपूर्ण इच्छा के बारे में बताया।

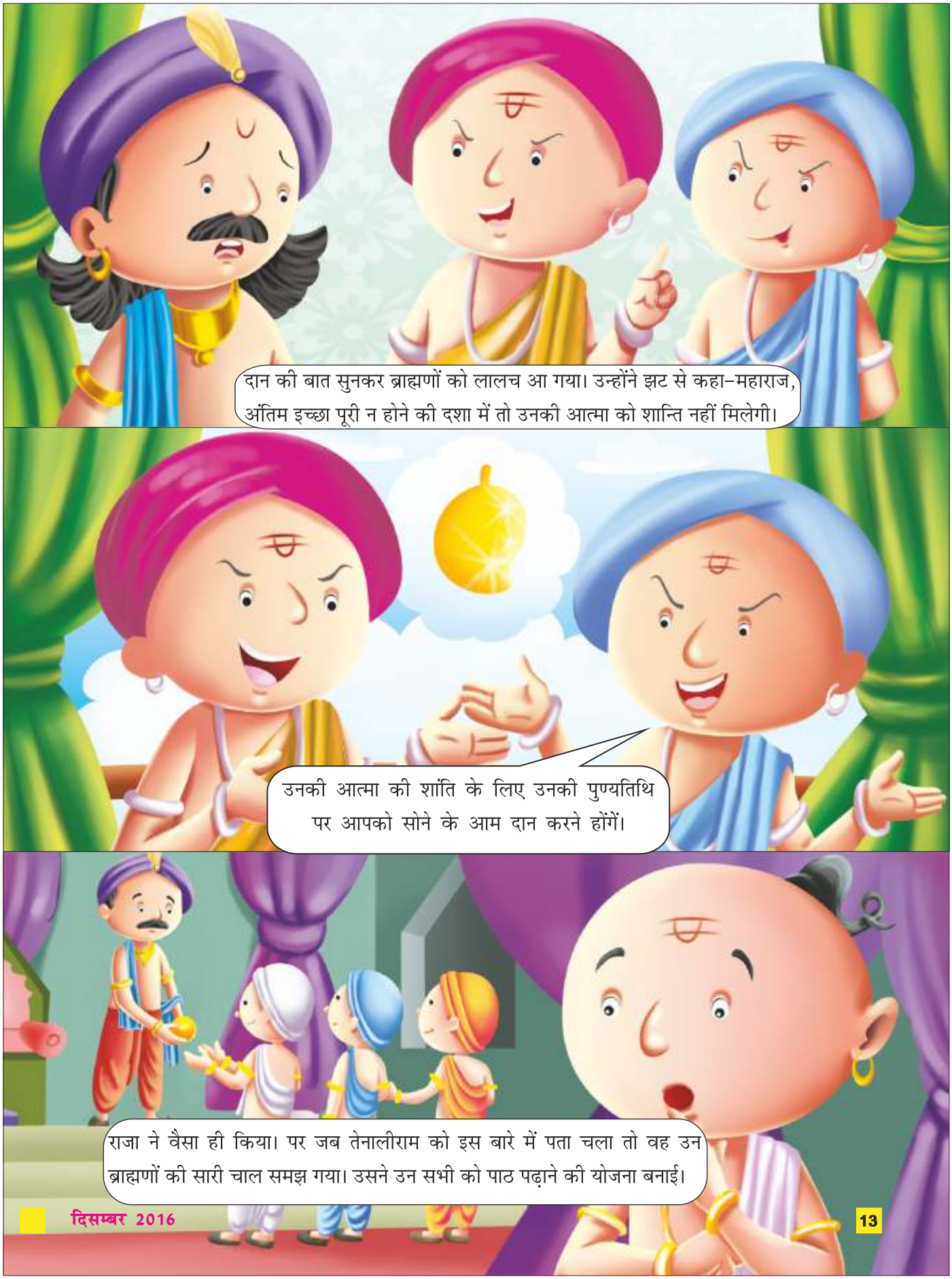
दान की बात सुनकर ब्राह्मणों को लालच आ गया। उन्होंने झट से कहा–महाराज, अंतिम इच्छा पूरी न होने की दशा में तो उनकी आत्मा को शान्ति नहीं मिलेगी।
उनकी आत्मा की शांति के लिए उनकी पुण्यतिथि पर आपको सोने के आम दान करने होंगें।
राजा ने वैसा ही किया। पर जब तेनालीराम को इस बारे में पता चला तो वह उन ब्राह्मणों की सारी चाल समझ गया। उसने उन सभी को पाठ पढ़ाने की योजना बनाई।

अगले दिन तेनालीराम ने उन ब्राह्मणों को एक निमंत्रण पत्र भेजा। उसमें लिखा था कि तेनालीराम भी अपनी माँ की पुण्यतिथि पर दान करना चाहता है, क्योंकि वह भी अपनी अंतिम इच्छा लेकर मरी थी। वह अपनी माँ की आत्मा की शांति के लिए दान करना चाहता है।

निमंत्रण पाकर ब्राह्मण तो बहुत खुश हुए कि तेनालीराम तो शाही विदूषक हैं, उनके घर से तो बहुत दान मिलेगा।

निश्चित दिन ब्राह्मण तेनालीराम के घर पहुँच गए। तेनालीराम ने सभी ब्राह्मणों को स्वादिष्ट भोजन कराया। भोजन के बाद ब्राह्मण दान की प्रतीक्षा करने लगे।

तभी उन्होंने देखा कि तेनालीराम लोहे की सलाखों को गर्म कर रहा है। पूछने पर तेनालीराम ने कहा–मेरी माँ फोड़ों के दर्द से परेशान थी। उनकी इच्छा थी कि मैं गर्म सलाखों से उनकी सिकाई कर दूँ। पर ऐसा करने से पहले ही उनकी मृत्यु हो गई।

अब उनकी आत्मा की शांति के लिए मुझे गर्म सलाखों से आपकी सिकाई करनी पड़ेगी। सारे ब्राह्मण घबरा गए और वे महाराज कृष्णदेव के पास पहुँचे। पीछे से तेनालीराम भी पहुँच गया।
यह सब क्या है?
महाराज, हमें बचाइए।
जैसे सोने के आम दान करने से महाराज आपकी माता जी को शांति मिल सकती है तो मेरी माँ को क्यो नहीं?
अब ब्राह्मण सारी बात समझ गए।
हमें माफ कर दीजिए। महाराज, हमने लालच में आकर ये सब किया।
इस तरह तेनालीराम ने अपनी समझदारी से लालची ब्राह्मणों को सबक सिखाया।

बोध कथा : राजेन्द्र परदेसी

सीख

भगवंत नगर में एक व्यक्ति रहता था। उसका नाम देवतादीन था। वह मूर्तियां बनाकर बेचता था। उसी से वह अपने परिवार का भरण–पोषण किया करता था।

देवतादीन का एक पुत्र था। उसका नाम मातादीन था। मातादीन जब बड़ा हो गया तो देवतादीन ने उसे भी मूर्तियां बनाना सिखा दिया।

देवतादीन की मूर्तियां जहाँ दो रुपये में बिकती थीं, वहीं बेटे की मूर्तियां उतनी अच्छी न होने से एक रुपये में बिकती। इसलिए देवतादीन अपने बेटे को मूर्तियां बनाते समय उसकी त्रुटियों को बताता रहता था। मातादीन अपने पिता की बातों को ध्यान से सुनता और उनके निर्देशों के अनुसार सुधार करता। धीरे–धीरे मातादीन की कला में निखार आने लगा। उसकी मूर्तियां अब तीन रुपये में बिकने लगीं। देवतादीन फिर भी बेटे को उसकी कमियों को समझाता रहता।

एक दिन मातादीन खीझकर पिता से बोला– मेरी मूर्तियां आपसे अच्छी बनती हैं तभी तो वह तीन रुपये में बिकती हैं, आपकी दो रुपये में ही। फिर भी आप मेरी मूर्तियों में त्रुटियां निकालते रहते हैं।

बेटे की बात सुनकर देवतादीन ने कहा– बेटा! युवावस्था में मुझे भी तुम्हारी तरह अहंकार हो गया था, इसी कारण आज तक दो रुपये में ही मेरी मूर्तियां बिकती हैं। मैं चाहता हूँ तुम्हें अपने पर अहंकार न हो। तभी तुम एक श्रेष्ठ कलाकार बन सकोगे।

पिता की बात सुनकर मातादीन अपनी कही बातों पर बड़ा लज्जित हुआ। वह पिता के चरणों पर गिरकर बोला– आज आपने मेरी आंखें खोल दीं। मुझे भटकने से रोक लिया। मैं आपकी यह सीख जीवनभर याद रखूँगा।

बेटे की बात सुनकर देवतादीन बहुत खुश हुआ कि बेटे के अन्दर उपजा अहंकार दूर हो गया।

कविता : राधेलाल 'नवचक्र'

खेलो खेल खेल-भाव से

चाहे जो भी खेलो खेल।
रखना तुम आपस में मेल।।
मेल बढ़ाना खेल सिखाता।
खेल इसी से सबको भाता।।
होती है जब खेल में हार।
करना तुम उस हार से प्यार।।
होती है जब खेल में जीत।
करना तुम उस जीत से प्रीत।।
हार–जीत में भेद न करना।
भेद–भाव से दूर ही रहना।।

खेलो खेल खेल–भाव से।
हर्ष–विषाद तज मेल–भाव से।।
जीवन इससे होता सुखमय।
मन में कभी न रहता है भय।।
खेल है एक ऐसी औषधि।
दूर भगाती नफ़रत की व्याधि।।
प्रेम बढ़ाता, मेल बढ़ाता।
सचमुच खेल अपनापन लाता।।
खेल–खेल में मेल बढ़ा लो।
सारी दुनिया एक बना लो।।

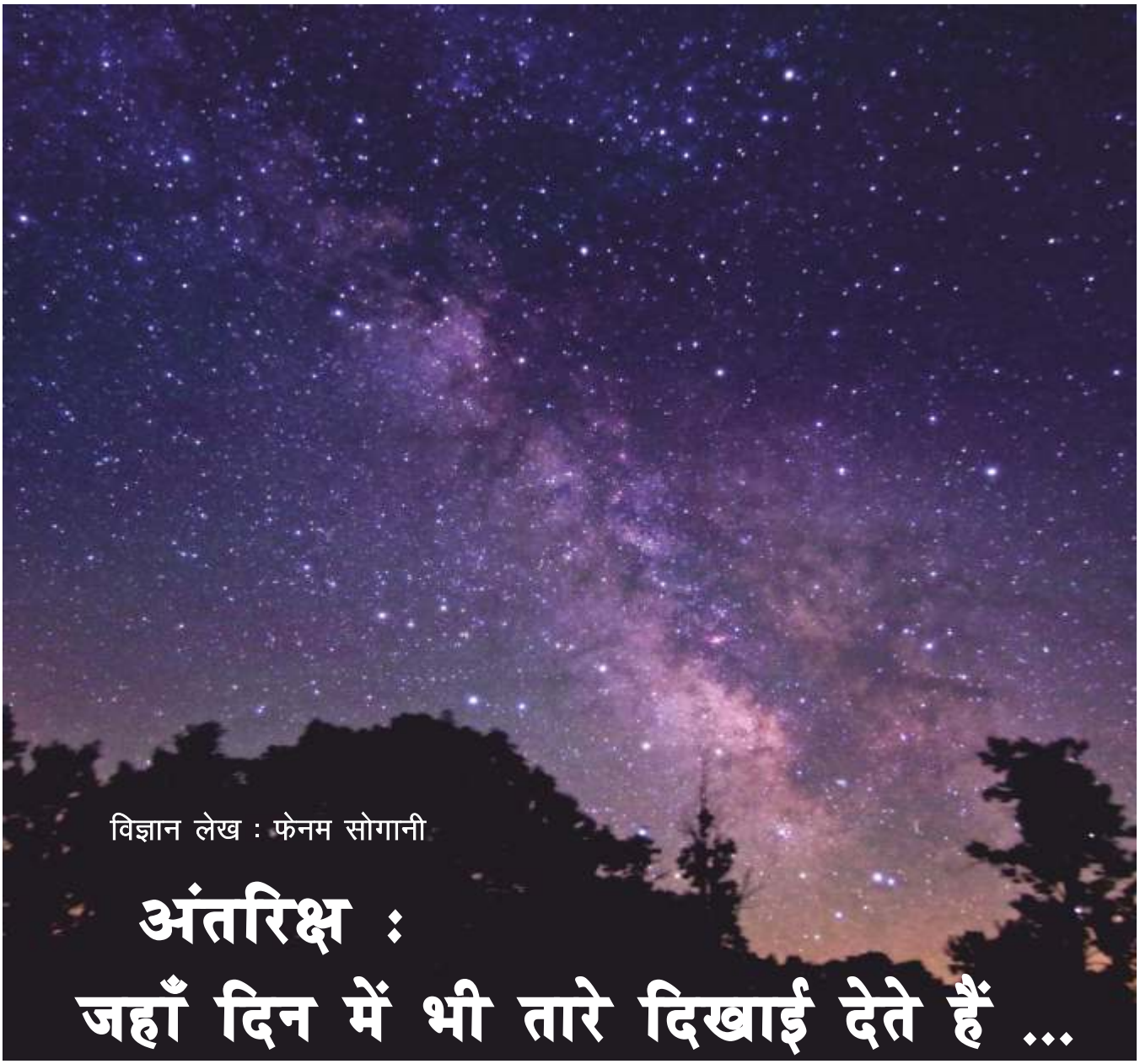

विज्ञान लेख : फेनम सोगानी

अंतरिक्ष : जहाँ दिन में भी तारे दिखाई देते हैं ...

दोस्तों! तुम्हें जानकर अचरज होगा कि नीलगगन में सूर्य जैसे 300 अरब तारे हैं। इन तारों का आकार सूर्य जैसा ही है। लेकिन एक भी तारे में सूर्य जैसा प्रकाश देने की शक्ति नहीं है। ये तारे धीरे–धीरे टिमटिमाते रहते हैं तथा आसमान में इधर–उधर तैरा करते हैं। जब ये तारे आपस में टकराते हैं तो भयंकर विस्फोट होता है लेकिन इनका मलबा धरती तक नहीं आ पाता, अधिक ऊँचाई के वायुमंडल में ही तैरता रहता है तथा मलबे के कण धीरे–धीरे आपस में चिपककर फिर से पिंड का रूप धारण करते रहते हैं। सूर्य के प्रकाश से इन पिंड को फिर से नवजीवन मिलता है। ये सैंकड़ों, हजारों साल उपरांत धीरे–धीरे हल्का–हल्का प्रकाश उत्पन्न करने लगते हैं और फिर से आसमान में तैरने लगते हैं।

दिन और रात के सफर में हजारों तारे प्रतिदिन टकराते हैं और फिर धीरे–धीरे जुड़कर तारे की तरह टिमटिमाने लगते हैं। हाँ, नीलगगन में तारों की जो विशाल बारात है उसे 'मिल्की वे' पुकारा जाता है। पृथ्वी से नीलगगन में नजर आने वाले सभी तारे 'मिल्की वे' आकाशगंगा का हिस्सा हैं, लेकिन ब्रह्मांड के फैलाव में ऐसी न जाने कितनी ही आकाशगंगाएं और भी हैं। यूं हमारा सौरमंडल 'मिल्की वे' आकाशगंगा के विशाल परिवार का एक छोटा–सा टुकड़ा है।

वैज्ञानिकों के अनुसार 'मिल्की वे' की अवधारणा नई नहीं कही जा सकती। भारतीय, मिस्त्र, अरबी आदि के चिंतकों ने कई सदियों पूर्व ही इसका अनुमान लगा लिया था। इतिहास तथ्यों से विदित होता है कि 17वीं सदी के पहले चरण में वैज्ञानिक गैलिलियो ने अपने टेलीस्कोप से देखकर आकाशगंगा की अधिकारिक पुष्टि की। खगोलविदो के अनुसार आकाशगंगा की बनावट सर्पिलाकार या घुमावदार है। पृथ्वी से देखने पर 'मिल्की वे' रात के आकाश को दो स्पष्ट गोलार्द्धों में विभाजित करता है। हाँ, इसके आधार पर माना जाता है कि हमारा सौरमंडल आकाशगंगा के भीतरी किनारे पर स्थित है।

खगोलविदो की टेलीस्कोप खोजों से विदित हुआ है कि एण्ड्रोमेडा आकाशगंगा में 12 खरब से भी अधिक तारे हैं। ब्रह्मांड में 'मिल्की वे' और एण्ड्रोमेडा जैसी ही अरबों आकाशगंगाएं दूर–दूर तक फैली हुई हैं।

ग्रीक वैज्ञानिकों के एक ताजा शोध के मुताबिक 'मिल्की वे' की उम्र 14.2 अरब वर्ष है यानि ब्रह्मांड की उम्र जितनी। 'मिल्की वे' में तारों के साथ ही धूल कण और गैस पिंड भी शामिल हैं। जो चार भुजाओं की शक्ल में उसकी घुमावदार संरचना का निर्माण करते हैं।

'मिल्की वे' के केन्द्र से सूर्य की अनुमानित दूरी 26 हजार प्रकाशवर्ष है। खगोलविदो का मानना है कि 'मिल्की वे' लगभग 636 कि.मी. प्रति सेकिंड की गति से आगे सरक रही है।

अंतरिक्ष में तो दिन में भी तारे दिखाई देते हैं। मंगल ग्रह को 'रेड स्टार' (लाल तारा) कहा जाता है। शुक्र ग्रह को 'इवनिंग स्टार' (शाम का तारा) नाम से भी जाना जाता है। ●

अंतरिक्ष और आकाश में क्या अन्तर है?

आकाश पूरे ब्रह्माण्ड का सूचक है, जिसमें हमारी पृथ्वी भी सम्मिलित है, जबकि अंतरिक्ष का अर्थ है पृथ्वी को छोड़कर शेष सभी स्थान है।

–प्रस्तुति :
विभा वर्मा (वाराणसी)

वर्ग पहेली

प्रस्तुतिः
विकास
अरोड़ा

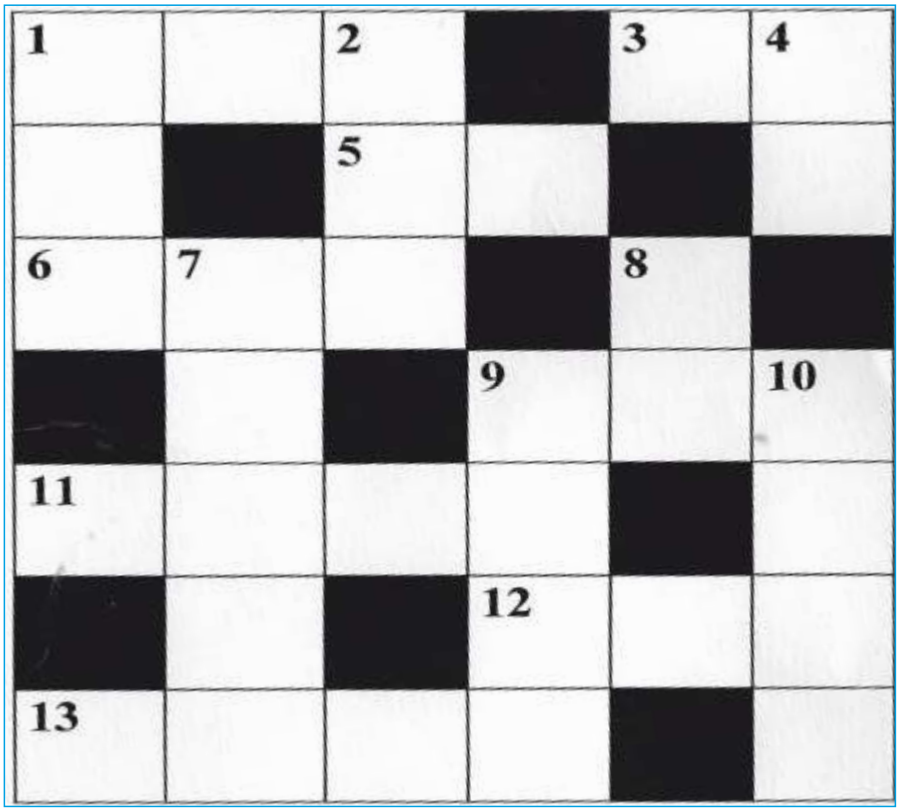

बाएं से दाएं →

1. लीबिया देश की राजधानी : बैंकाक / त्रिपोली।
3. मम्मी की देवरानी।
5. एक हजार किलोग्राम यानि एक ..... ।
6. बहादुर शाह ..... आखिरी मुगल बादशाह थे।
9. एक काँटेदार पेड़ का नाम।
11. पुल्लिंग : बंदर, स्त्रीलिंग : ..... ।
12. पुर्तगाल देश की राजधानी।
13. वह किताब जिसमें मानचित्रों का संग्रह होता है, उसे ..... कहते हैं।

ऊपर से नीचे ↓

1. तीन भुजाओं वाली आकृति।
2. मीटर और लीटर में से जो द्रव्य मापने की इकाई है।
4. इस पंक्ति में छुपे एक एशियाई देश का नाम ढूंढ़िए : यह इलायची नकुल को दे दो।
7. फरीदकोट और भरतपुर में से जो शहर पंजाब में है।
8. माउंट ..... शहर राजस्थान का एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है।
9. हर साल गाँधी जयंती और बाल दिवस के बीच कितने दिन होते हैं?
10. उत्तर प्रदेश के ..... शहर को 'नवाबों का शहर' भी कहते हैं।

(वर्ग पहेली के उत्तर इसी अंक में हैं)

बाल कहानी : हरजीत निषाद

कालू कौआ और मयंक मोर

बेनीपुर के जंगल में बहुत से पशु–पक्षी रहा करते थे। उनमें आपस में प्रेम और सद्भाव के कारण कोई टकराव नहीं होता था। जंगल का राजा शेर, महामंत्री हाथी की सहायता से जंगल का राज्य चलाता था। बंदर और पक्षियों का कार्य सन्देश यहाँ से वहाँ पहुँचाना होता था।

जंगल की अमऊ झील में हंस, बुगले और सारस रहते थे। हंसों का जोड़ा शालीनता से यहाँ से वहाँ सैर करता तो बगुले एक टांग पर खड़े होकर दावत उड़ाने के लिए नन्हीं मछलियों का एकटक इन्तजार करते। सारस अपनी लम्बी टांगों पर खड़े हुए दूर से ही नजर आ जाते थे। वे भी बगुलों की तरह ही पानी में तैर रही मछलियों का बड़ी कुशलता से शिकार करते और बीच–बीच में ऊँची आवाज में च्चों–च्यों करते रहते थे।

अमऊ झील के किनारे दूर–दर तक तरह–तरह के पेड़ों पर उल्लू, चील, तोता, कौआ, कोयल जैसे पक्षी आपस में बातें करके समय बिताते थे। बाज और गिद्ध को ज्यादा ऊँचाई पर रहना पसन्द था इसलिए वे कोई ऊँची जगह ढूंढकर वहाँ अपना अड्डा जमा लेते और भोजन पानी के लिए नीचे आते थे। बाज को उड़ते पक्षियों का शिकार करने में दक्षता हासिल थी तो गिद्ध मरे हुए पशुओं को खाकर सन्तोष कर लेता था इसलिए गिद्ध को जंगल का सफाईकर्मी कहा जाता था।

मोर अपनी सुन्दरता और नृत्य के कारण सबका प्रिय था। बरसात का मौसम आते ही मोर ऊँची आवाज में केहां–केहां करता फिर पेड़ की डाल से उतरकर नीचे आ जाता और अपने रंग–बिरंगे पंख फैलाकर, गोल–गोल घूमकर जी भरकर नाचता। जंगल के सारे पशु–पक्षी उसके सुन्दर नृत्य पर मुग्ध हो जाते और मोर की खूब प्रशंसा करते थे।

कालू कौआ इन सबसे अलग पेड़ की डाल पर बैठकर अपना समय बिताता। उसे अपने काले रंग और कर्कश कांव–कांव की आवाज पर बहुत ग्लानि होती थी। वह सोचता था कि परमात्मा ने उसे ज्यादा सुन्दरता और सुरीली आवाज क्यों नहीं दी? एक दिन कालू ने सोचा क्यों न मैं अपने मन की व्यथा को हंस विवेक दादा को कह सुनाऊं। वहाँ विवेक दादा को 'नीर क्षीर विवेक' वाला कहा जाता था। वो दूध और पानी को अपनी कला से अलग–अलग कर देने में माहिर थे। कालू सोचता कि मेरे मन में सुन्दरता को लेकर जो हलचल है विवेक दादा निश्चित रूप से उसका समाधान करेंगे। ऐसा सोचता हुआ कालू कौआ, विवेक हंस के पास पहुँचा और सीधे–सपाट शब्दों में अपने मन की सारी बातें भारी मन से उन्हें कह सुनाईं।

कालू ने कहा– दादा मुझे यह बताइए कि परमात्मा ने मुझे आप जैसा चमचमाता सफेद रंग क्यों नहीं दिया। आप जैसा शान्त स्वभाव और वाणी क्यों नहीं दी? आखिर मेरा दोष क्या है?

हंस विवेक दादा ने कालू कौए की बातें ध्यान से सुनी और फिर उसे समझाया– कालू तुम्हें लगता होगा मैं बहुत खुश हूँ लेकिन हरिया तोते को देखो, उसका रंग चटक हरा है। उस पर सुर्ख लाल रंग की चोंच कितनी सुन्दर लगती है। वह जब अपने साथी तोतों के साथ झुण्ड में उड़ता टें टें–टें टें करता हुआ निकलता है तो कितना अच्छा लगता है। उस समय मुझे अपने अन्दर बहुत कमियां नज़र आती हैं। जाकर हरिया तोते से बात करो, शायद उसके पास तुम्हारे प्रश्नों का सही उत्तर हो।

कालू को हंस की समझदारी भरी बातों में दम नजर आया और वह हरिया तोते से मिलने उड़ चला। हरिया उस समय आम के पेड़ पर बैठा डाल पर पके हुए आमों की दावत उड़ा रहा था। कालू को देखकर हरिया ने कहा, ''आओ भाई कालू, कैसे आना हुआ।''

कालू कौए ने कहा, ''मैं अपने मन में बार–बार उठ रहे प्रश्न का समाधान पाने के लिए आया हूँ। पहले मैं हंस विवेक दादा के पास गया लेकिन उन्होंने मुझे तुम्हारे पास भेज दिया। अब तुम्हें ही मुझे संतुष्ट करना होगा।''

हरिया तोते ने कहा, ''हंस दादा बहुत समझदार और शान्त स्वभाव वाले हैं। अमऊ झील के आसपास रहने वाले सभी पशु–पक्षी उनका बहुत सम्मान करते हैं और उनके पास ही अपनी समस्याओं के हल के लिए जाते हैं। काफी दूर से चलकर आए हो, थक गए होगे। लो पहले यह मीठे–मीठे स्वादिष्ट आम खाओ। फिर आराम से बातें करते हैं।''

हरिया तोते का सत्कार देखकर कालू कौए को बहुत खुशी हुई। उसे लगा हरिया से उसे अपने अशान्त मन को शान्त करने का उपाय भी अवश्य ही मिलने वाला है। भरपेट आम खाने के बाद कालू बोला, ''हरिया भाई, आज तो भोजन करने में मजा आ गया। अब तुम मेरे प्रश्न का जवाब दो जिसके लिए विवेक दादा ने मुझे आपके पास भेजा है।''

हरिया तोता बोला, ''हाँ, हाँ, बताओ क्या कहना चाहते हो?''

कालू ने अपनी दर्द भरी कहानी सुनाते हुए कहा, ''मेरा रंग गहरा काला और भद्दा है। मेरे रंग में कोई आकर्षण, कोई रंगबिरंगापन नहीं है जैसे कि तुम्हारा हरा धानी रंग और सुन्दर सुर्ख लाल चोंच जो हर किसी का ध्यान अपनी ओर बड़ी सहजता से आकृष्ट कर लेता है। तुम्हारी टें टें की आवाज भी लोगों को दूर से आकर्षित कर लेती

है। एक मैं हूँ कि एक तो रंग काला और ऊपर से जब कभी मैं सुरीले स्वर में कांव–कांव का संगीत सुनाना चाहता हूँ तो मेरी आवाज किसी को अच्छी ही नहीं लगती और लोग पत्थर मारकर या जोर जोर से तालियां बजाकर मुझे भगा देते हैं। मेरा गाना सुनना तो दूर मेरा संगीत सुनना भी किसी को अच्छा नहीं लगता। मुझसे तो अच्छी सुरैया कोयल है जिसका रंग भले ही काला है लेकिन उसकी आवाज को तो लोग सुनना चाहते हैं। यह सब सोचते–सोचते मैं निराश हो उठता हूँ और मुझे लगने लगता है कि मेरा तो जीवन ही बेकार है।''

हरिया बहुत गम्भीरता से कालू कौए की बातें सुनता रहा और उसने देखा कि केवल कालू की दर्द भरी कहानी को ध्यान से सुन लेने से ही कालू को बहुत राहत मिली है जबकि अभी तो उसके प्रश्नों का उत्तर दिया ही नहीं गया है। अब हरिया ने उसे समझाना शुरू किया, ''भाई कालू अपने रंग–रूप और कर्कश आवाज को लेकर हताश होने की आवश्यकता बिल्कुल नहीं है। मैंने अक्सर देखा है कि शिकारी पशु–पक्षियों के आक्रमण के समय जब तुम जोर–जोर से कांव–कांव की आवाज करते हो तो जंगल के कितने ही गहरी नींद में सो रहे पक्षी जाग जाते हैं और अपना बचाव कर पाने में सफल होते हैं। तुम्हारे अपने काले रंग के कारण शिकारी पक्षी तुम्हें आसानी से डालियों–पत्तियों के बीच छुपे होने के कारण देख ही नहीं पाते और तुम बड़ी सरलता से अपने आप को मौत के मुँह में जाने से बचा लेते हो। यह तुम्हारे रंग और स्वर का ही तो कमाल है जो तुम इतना कुछ कर पाते हो। अपनी विशेषता और गुणों को पहचानों और इन पर गर्व करो न कि इनको लेकर अनावश्यक रूप से दुखी होते रहो।''

हरिया तोते की बातें सुनकर कालू कौए को लगा हरिया और इसके साथी तोते तो वर्षों से मेरे मित्र रहे हैं लेकिन इसके अन्दर इतने गुण छुपे हुए है मुझे तो इसकी भनक भी नहीं थी। भला हो हंस विवेक दादा का जो उन्होंने समझा बुझाकर

मुझे हरिया के पास भेजा। अब मुझे स्पष्ट लगने लगा है कि हंस के पास वास्तविकता में 'नीर क्षीर विवेक' होता है। हंस को दूध का दूध पानी का पानी करने की कला अच्छी तरह आती है। वह कभी स्वयं समझा कर, या कभी किसी योग्य व्यक्ति के पास भेजकर समझ प्रदान कराते हैं। शायद इसीलिए ही कहा गया होगा अच्छों का संग करो। अच्छी सीख और अच्छी सोच अच्छों का संग करने से ही प्राप्त होती है। बिना सत्पुरुषों के संग के विवेक कहाँ मिलने वाला है मैंने यह भी सुन रखा है 'बिन सत्संग विवेक न होई।'

हरिया ने बात को जारी रखते हुए कहा, ''भाई कालू, मुझे तो कुछ आता जाता नहीं, हाँ हंस दादा ने मुझ पर भरोसा रखकर तुम्हें मेरे पास भेजा है इसलिए मुझे जो कुछ मालूम है उसे खुले दिल से तुम्हें कह चुका हूँ बल्कि मैं तो यही कहूँगा कि मयंक मोर को देखो वह कितना खुशनसीब है। मेरे पास तो केवल हरा और काला रंग है, मयंक मोर के पास तो रंगों का पूरा इन्द्रधनुष ही साथ चल रहा है। नीली गर्दन, रंग–बिरंगे बड़े–बड़े पंख, सिर पर मुकुट जैसी सुन्दर कलगी ऊपर से नृत्य कला में पारंगत होना और केहां–केहां की उसकी बुलंद आवाज। तुम्हें कुछ सीखना समझना हो तो मयंक मोर के पास अवश्य जाना चाहिए। भाई कालू मै तो इस विचारधारा को मानता हूँ कि हमारी इसी दुनिया में कितने रूपवान, बुद्धिमान और गुणवान लोग रहते हैं। सभी से कुछ न कुछ सीखा जा सकता है और जो सीखता रहता है वह अपनी सुन्दरता, लोकप्रियता और उपयोगिता को लगातार बढ़ाता चला जाता है।

कालू कौए को लगा हरिया भाई ठीक ही तो कह रहा है। अब मैंने आम का सुन्दर स्वादिष्ट नाश्ता भी कर लिया है और हरिया की

सुन्दर–सुन्दर बातों का ताजा–ताजा प्रभाव भी मेरे ऊपर है तो फिर क्यों न मैं मयंक मोर से मिलकर कुछ और जानकारी हासिल कर लूँ। वैसे भी अब मुझे घर जाकर डाल पर बैठे–बैठे ऊंघना ही तो है। यही अच्छा रहेगा कि मैं समय का सदुपयोग करूं और मयंक मोर के पास जाकर कुछ सीख लूं।

कालू कौए ने हरिया को अलविदा कहते हुए ऊँची उड़ान भरी और अमऊ झील के तट पर उस स्थान पर जा पहुँचा जहाँ मयंक मोर अपने परिवार के साथ रहता था। मयंक मोर के साथ पत्नी मोरनी शालिनी और दो बच्चे चिंटू और मिंटू रहते थे। कालू ने दूर से ही देख लिया कि मयंक मोर और उसका परिवार झील के तट पर आनन्द से घूम–टहल रहे हैं।

कालू जब वहाँ पहुँचा तो चारों तरफ काली–काली घटाएं घिर आई थीं। लग रहा था जैसे घनघोर बरसात होने वाली है। काले–काले बादलों को देखकर मयंक मोर का मन खुश हो गया खुशी में वह अपने रंग–बिरंगे पंखों को फैलाकर नाचने लगा। वह गोल–गोल घूमता जा रहा था और झूम झूमकर नाचते हुए मस्त हो रहा था। उसकी पत्नी और बच्चे भी मयंक के सुन्दर नृत्य का आनन्द ले रहे थे।

कालू को यह सब देखना बहुत मनोरम लगा। उसे लगा कि मैंने स्वर्ग तो नहीं देखा है लेकिन मयंक और उसके परिवार की खुशी देखकर मुझे यही लग रहा है कि जहाँ प्यार है, मिलवर्तन और सद्भाव है वहीं स्वर्ग है। कालू यह सब कुछ देखता–सुनता–सोचता हुआ मयंक मोर के समीप आकर बैठ गया। अब तक मयंक का नृत्य भी खत्म हो चुका था।

मयंक ने कहा, ''आओ भाई कालू कैसे हो, बहुत दिनों में इधर का रुख किया। सब कुशलमंगल तो है न!

कालू ने हाँ में सिर हिलाया और कहने लगा, ''मयंक भाई आज तुम्हें और तुम्हारे परिवार को खुशी–खुशी रहते हुए देखना मुझे बहुत अच्छा लग रहा है और मुझे लगने लगा है कि 'प्यार सजाता है गुलशन को और नफरत वीरान करे।' गुलशन को प्यार ही सजाता है नफरतें तो उसको उजाड़ने का ही काम करती हैं। मयंक मोर जोर से ठहाका लगाकर हँसा और बोला, ''लो भाई कालू इसमें क्या शक है प्यार और मिलवर्तन से ही हमारी धरती स्वर्ग रही है। और सुनाओ कैसे हो तुम, कैसे आना हुआ आज मेरी कुटिया में। लो पहले कुछ खा कर झील का ठंडा पानी पी लो फिर दोनों बैठकर आराम से बातें करेंगे। अभी–अभी मैं यह जहरीला सांप मारकर लाया हूँ इसने बड़ा उत्पात मचा रखा था। रोज नन्हीं गोरैया के अंड़े चुपके से चट कर जाता था और भी कितनों को अपने जहर का भय दिखाकर डराता रहता था। आओ आज इसका ही नाश्ता किया जाए।''

कालू को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह बोला, ''मयंक भाई तुम्हारी सुन्दरता और नृत्य कला का तो मैं कायल हो गया। मैं ही क्या सारी दुनिया इसकी प्रशंसक हैं लेकिन इतने जहरीले सांपों को बिना डरे तुम कैसे मार डालते हो। तुम्हारे अन्दर कहाँ से शक्ति और साहस आ जाता है मुझे भी तो बताओ।''

मयंक मोर ने गहरी सांस ली और फिर बोला, ''कालू भाई परमात्मा ने बहुत विविधता में संसार की रचना की है। सभी के अन्दर गुण भरे हैं और दोष भी। धरती पर हर कोई गुण और दोष का मिलाजुला रूप है। मुझे ही देखो परमात्मा ने मुझे क्या नहीं दिया इतना सुन्दर रूप, ऊँची बुलंद आवाज और ऊपर से इतनी निर्भयता और क्षमता कि जहरीले नाग भी मेरे पास फटकने की हिम्मत

नहीं करते लेकिन मेरे अन्दर भी तो कमी हो सकती है। अच्छा कालू भाई दिमाग पर जोर लगाकर जरा बताओ तो सही कि मेरे अन्दर क्या कमी है।''

कालू ने दिमाग पर बड़ा जोर लगाया परन्तु मयंक मोर की कोई कमी न ढूंढ़ पाने पर कहा, ''मयंक भाई क्यों मजाक करते हो। मैं पूरी गारंटी से कह सकता हूँ कि तुम्हारे अन्दर कोई कमी है ही नहीं।''

मयंक मोर का स्वर पुनः गम्भीर हो गया। मयंक ने कहा, ''कालू भाई, तुमने मेरी सुन्दरता देखी लेकिन मेरे पैरों की कुरूपता की ओर तुम्हारी नजर नहीं गई। मैं जब मस्ती से नाच रहा होता हूँ और जंगल के सभी पशु–पक्षी मेरी सुन्दरता और नृत्य कला पर मुग्ध हो रहे होते हैं तब मैं अपने पैरों की कुरूपता देख–देख कर दुखी होता रहता हूँ। इसलिए आज से तुम मेरी यह बात गांठ बांध लो कि गुण–दोष हर किसी में होते हैं। अपने गुणों को देखकर या अपनी प्रशंसा सुनकर कभी मोहित मत होना और अपनी नजर हमेशा अपने अवगुणों पर रखना ताकि तुम उनको दूर कर सको। उन कमियों से मुक्त होकर अपनी सुन्दरता को और निखार सको।''

मयंक मोर की बातें सुनकर कालू कौए को बहुत खुशी मिली। आज का दिन उसके लिए बहुत अच्छा रहा। आज उसने हंस विवेक दादा, हरिया तोता और मयंक मोर से बहुत कुछ सीखा वह आज का दिन कभी नहीं भुला पाएगा। तभी मयंक मोर का स्वर उभरा, ''कालू भाई एक पते की बात हमेशा याद रखना– परमात्मा से जब भी मांगना अच्छों का संग मांगना। अच्छों का संग मिलेगा तो मनबुद्धि ठीक रहेगी। धरती पर रहने वाले सर्वोत्तम प्राणी मानव को देख लो या सभी पशु–पक्षियों अथवा मछलियों आदि को अच्छा संग सभी के लिए आवश्यक और उपयोगी है। इन्सान इसे सत्संग कहते हैं और श्रेष्ठता हासिल करते हैं। हमें भी ऐसा ही करना चाहिए।''

कविता : कमल सिंह चौहान

सूरज और हवा

चिड़िया बोली तितली डोली,
बच्चों ने अब आँखें खोली।
सूरज ने किरणें बिखराई,
शुद्ध हवा ने ठंडक घोली।

डाली में कलियाँ शरमाई,
तोते ने भी टेर लगाई।
डूबा चंदा तारे छिप गये,
मेंढक भी अब टर्र–टर्र बोली।

फूलों ने अब घूंघट खोला,
काँव–काँव कर कौआ बोला।
फुदक रहा है बछड़ा देखो,
में–में करती बकरी भोली।

हिलमिल कर रहते हैं सारे,
धरती माँ के बच्चे प्यारे।
अच्छा काम हो नाम बड़ा,
यह कहते माँ हँसकर बोली।

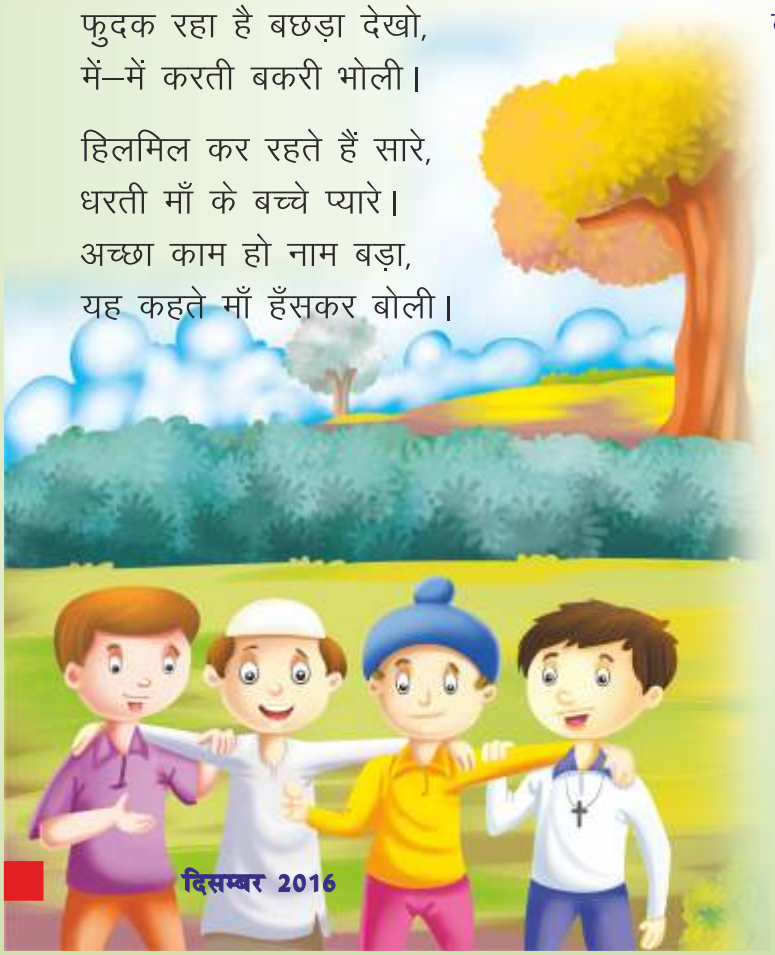

मिलकर सोचें

बाल कविता : डॉ. रामनिवास 'मानव'

मिलकर बैठें, मिलकर सोचें,
बातें करें विकास की।

आपस में हो भाईचारा।
मन हो ज्यों मन्दिर–गुरुद्वारा।
रहे भावना भरी मनों में,
मस्ती औ' उल्लास की।

अलग–अलग हों रंग सभी के।
अलग–अलग हों ढंग सभी के।
फिर भी रहे एकता सब में,
डोरी हो विश्वास की।

नापें धरती उड़ें गगन में।
संकल्पों का बल हो मन में।
स्वर्ग बनाना है धरती को,
आशा करें उजास की।

प्रस्तुति : बी.आर. चोपड़ा

पहेलियां

1. धन दौलत से बड़ी है यह।
सब चीजों से ऊपर है यह।
जो पाए पंडित बन जाए।
बिन पाए इसे मूर्ख कहलाए।

2. देह काठ मुंह आठ।
सूरत जानी पहचानी।
वैसे उसकी जीभ नहीं है।
पर बोले मीठी वाणी।

3. तीन अक्षर का मेरा नाम।
उल्टा सीधा एक समान।
आता हूँ आराम के काम।

4. दो अक्षर का नाम रत्न है।
उल्टो तो बन जाता है राही।
धारण करो प्रेम से मुझ को।
पर चखने की है मनाही।

5. करता है जो लगातार काम।
तीन भाई और एक मकान।
जो न करे तनिक विश्राम।
कौन बताए उसका नाम।

6. एक चाँद अठारह तारे।
खेलें मुन्ना–मुन्नी प्यारे।

7. दूर दूर की सैर कराती।
नहीं मैं कोई मोटर कार।
एक जगह पर खड़ी रहूँ मैं।
नाम बतलाओ मेरा यार।

8. न पहिए न पैर हमारे।
फिर भी चलती जाती हूँ।
कई रंग का पानी पीती।
खाना कभी न खाती हूँ।

पहेलियों के उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देखें

कभी न भूलो

संग्रहकर्ता : जगतार 'चमन'

★ परमात्मा को रिझाना तभी सम्भव है, जब हम इन्सानों को भी अपनाएं।

★ निराकार प्रभु से नाता जोड़ें, इसी से सभी सुख प्राप्त होते हैं।

★ भक्त ही होते हैं जो सूखे को हरियाली में तब्दील करते हैं। तपते हुए हृदय को शीतलता प्रदान करते हैं।

★ सुन्दर भावनाओं से युक्त होकर प्यार भरा संसार सजाते जाएं।

★ सहनशीलता कमजोरी नहीं, बल्कि बल की सूजक है।

★ घृणा को घृणा से नहीं, केवल प्रेम से ही मिटाया जा सकता है।

★ एक–एक पल को संवारने का मतलब जीवन को संवारने से है। समय को हम क्या संवारेंगे, क्या बिगाड़ेंगे। समय तो अपनी रफ्तार से चल ही रहा है।

– बाबा हरदेव सिंह जी

★ जिसने अपनी जिन्दगी का एक घंटा बिना सोचे बर्बाद किया, वो जीवन के सही मायने कभी नहीं समझ पाएगा।

– चार्ल्स डार्विन

★ महान लोग खेल–खेल में ही उपदेश दे जाते हैं। – शेख सादी

★ किसी काम को करने के बारे में बहुत देर तक सोचते रहना अक्सर उसके बिगड़ जाने का कारण बनता है। – ईवा यंग

★ सक्रियता से विश्वास और साहस आते हैं। यदि आप डर को जीतना चाहते हैं तो बाहर निकलकर काम में जुट जाएं।

– डेल कार्नेगी

★ हरदम प्रसन्न रहना आसान है परन्तु इसका सिर्फ एक ही रास्ता है, व्यक्ति उन तमाम बातों की चिंता छोड़ दे, जो उसके बस से बाहर हैं।

– एपिकटेटस, यूनानी दार्शनिक

★ अच्छा चरित्र व्यक्ति को लोकप्रिय और आकर्षक बनाता है। – चाणक्य

★ विफलता जैसी कोई चीज नहीं है। ये तो सिर्फ परिणाम है। – टोनी रॉबिन्स

★ छोटी चीजों में वफादार रहिये क्योंकि इन्हीं में आपकी शक्ति निहित है। – मदर टेरेसा

विज्ञान लेख : कमल सोगानी

वायुमंडल में बढ़ती कार्बन डाइआक्साॅइड ...

जलवायु वैज्ञानिकों का कहना है कि उद्योगों के कारण कार्बन डाइऑक्साइड, कार्बन मोनोक्साइड, मीथेन, नाइट्रस आक्साइड, ओजोन, क्लोरोफ्लोरो तथा कई अन्य गैस वायुमंडल के निचले हिस्से में जमा हो जाती है। हालांकि वे सूर्य की किरणों को पृथ्वी पर पहुँचने से नहीं रोक पाती लेकिन अतिरिक्त गर्मी को किसी विशाल ग्रीन हाउस (पौधों को कृत्रिम जलवायु में विकसित करने के लिए बनाया गया) कांचघर की तरह रोककर रखती है। वैज्ञानिकों ने इसे 'ग्रीन हाउस प्रभाव' का नाम दिया है। इसी प्रभाव के कारण पृथ्वी की जलवायु का तापक्रम स्थायी रूप से कुछ डिग्री बढ़कर प्रलय का रूप धारण कर कहर ढा सकता है।

वायुमंडल में हर साल एक अरब साठ करोड़ टन कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा जुड़ती जा रही है। मगर इसे सोखने वाले जंगल दिन पे दिन घटते जा रहे हैं। सागर की कार्बन डाइऑक्साइड सोखने की क्षमता 42 प्रतिशत है, जो सन् 2040 तक मनुष्य द्वारा उत्पादित कार्बन डाइऑक्साइड की 25 प्रतिशत मात्रा ही सोख सकेगी। यदि ऊर्जा खपत की वर्तमान दर चलती रही तो सन्

2040 तक ऊर्जा की मांग अभी से पांच गुना अधिक बढ़ जायेगी जिससे पृथ्वी के तापक्रम में वृद्धि तो होगी ही, बाढ़ग्रस्त तटीय क्षेत्रों और मौसम में भयानक परिवर्तन होंगे। गर्मी बढ़ने से ध्रुवीय क्षेत्र में जमी बर्फ के पिघलने से हवा में मीथेन की मात्रा भी बढ़ेगी। मीथेन भी ग्रीन हाउस पैदा करने वाली गैस है।

(शेष पृष्ठ 33 पर)

बाल कहानी : राजकुमार जैन 'राजन'

सच्चा सम्मान

एक कलाकार था। नाम था– सूरसेन। वह स्वांग रचने की कला में सिद्धहस्त था। इसी कला का प्रदर्शन कर वह अपना तथा परिवार का पेट पालता था। एक समय ऐसा आया कि उसे किसी ने कई सप्ताह तक स्वांग के बदले एक फूटी कौड़ी भी नहीं दी। यहाँ तक कि परिवार के भूखों मरने की नौबत आ गई।

ऐसे कठिन समय में सूरसेन राजा विजयवर्मा के दरबार में भिक्षा मांगने जा पहुँचा। विजयवर्मा बड़े परोपकारी व दानवीर राजा थे। उन्हें कला की परख थी। वे कलाकारों से अगाध प्रेम करते थे।

सूरसेन के भिक्षा मांगने पर राजा विजयवर्मा बोले, "यह ठीक है कि हम कलाकारों से प्रेम करते हैं, लेकिन हम उन्हें भिक्षा नहीं दे सकते। भिक्षा तो उस व्यक्ति को दी जाती है, जो बेकार हो तथा उसके पास कमाने का कोई साधन न हो। तुम्हारे पास तो कला जैसी अमूल्य धरोहर

है, फिर हम तुम्हें भिक्षा देकर कला का उपहास कैसे उड़ा सकते हैं। हाँ, अगर तुम अपनी कला का कोई नमूना हमें दिखाओ तो हम तुम्हें पुरस्कार दे सकते हैं।''

राजा विजयवर्मा की बात सुनकर सूरसेन का सिर लज्जा से झुक गया। उसने अपनी कला का श्रेष्ठ प्रदर्शन राजा विजयवर्मा के सम्मुख करने का निश्चय किया।

एक दिन राज्य में एक महात्मा जी पधारे। वह एक पीपल के पेड़ के नीचे आँखें मूंदकर ध्यानमग्न बैठ गये। महात्मा जी के पधारने का समाचार सुनकर लोग उनके पास आशीर्वाद लेने आने लगे। लेकिन महात्मा जी सब बातों से बेखबर आँखें मूंदे शांत मुद्रा में बैठे रहे। उनके सफेद वस्त्र और तेजमय चेहरा लोगों को आकर्षित करते। अनेक व्यक्तियों ने महात्मा के चरणों में धन–दौलत अर्पण करने की भी कोशिश की मगर सब व्यर्थ।

यह बात राजा विजयवर्मा तक भी पहुँची। वह हीरे–जवाहरात व लाखों स्वर्ण मुद्राएं लेकर अपने सभासदों के साथ उस महात्मा जी के पास दर्शनार्थ पहुँचे। महात्मा जी ने स्वर्ण मुद्राओं आदि को स्वीकार करना तो दूर, आँख खोलकर देखा भी नहीं। निश्चल भाव से ध्यानमग्न बैठे रहे।

महात्मा जी के इस व्यवहार से राजा बड़े प्रभावित हुए। वे उनके चरणों में नतमस्तक होकर लौट आए।

अगले दिन दरबार में महात्मा जी को देखकर राजा विजयवर्मा उनके चरण छूने सिंहासन से उतरे तो महात्मा जी अपने वस्त्र हटाते हुए बोले, ''कहो राजन! महात्मा वाला प्रदर्शन कैसा लगा? आप इसके बदले मुझे जो चाहें पुरस्कार दे सकते हैं?''

''ओह, तो क्या यह नाटक था? लेकिन तुमने आम जनता व मेरे द्वारा भेंट की जाने वाली अपार धन–दौलत स्वीकार क्यों नहीं की? उसको पाकर तो तुम धनी व्यक्ति बन सकते थे।''

''राजन, उस समय मैं एक साधू की वेशभूषा में था और एक कलाकार होने के कारण उस वेशभूषा की लाज रखना भी मेरा कर्तव्य था।'' सूरसेन आगे बोला, ''यही सोचकर मैंने प्रलोभनों को स्वीकार नहीं किया। लेकिन पेट की भूख शांत करने के लिए मुझे आपके पास पुरस्कार प्राप्त करने आना पड़ा, क्योंकि मेरी कला का भी पेट के लिए कुछ कर्तव्य हैं।''

राजा विजयवर्मा सूरसेन के विचार सुनकर गद्‌गद् हो उठा। सूरसेन को एक लाख स्वर्ण मुद्राएं पुरस्कार स्वरूप देकर विदा किया। कला का सच्चा सम्मान पाकर सूरसेन गद्‌गद् हो उठा।

(पृष्ठ 30 का शेष भाग)

वायुमंडल में बढ़ती कार्बन डाइआक्सॉइड ...

कम्प्यूटर से ग्रीन हाउस प्रभाव का अध्ययन करने पर अनुमान है कि अगली शताब्दी में वायुमण्डल का ताप 1.5 डिग्री सेल्सियस से 4.5 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा। 1980 का दशक ज्ञात इतिहास का सबसे अधिक गर्म दशक रहा है। यदि यह अनुमान सही है तो आज से 100 वर्ष उपरान्त पृथ्वी उतनी ही गर्म होगी जितनी वह 18000 साल पहले बर्फ युग से निकलने के बाद थी, मगर उससे यह कोई 37 गुना तेज होगी।

हाँ, कुछ वैज्ञानिकों का यह भी अनुमान है कि एक लाख वर्षों से वायुमण्डल में कार्बन डाइऑक्साइड जैसी गैस का संतुलन बना हुआ है। वायुमण्डल के 10 लाख अंशों में इसके कुछ 100 अंश ही होगें। लेकिन यही पृथ्वी का औसत तापमान 15 डिग्री सेल्सियस पर रखता है। जैसे–जैसे हिम युग आये और गये कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा में थोड़ा बहुत अंतर जरूर होता रहा, लेकिन आधुनिक युग की औद्योगिक क्रांति से पूर्व वह कुल मिलाकर 10 लाख में 280 हिस्से बना रहा।

यूं ग्रीन हाउस गैसों का स्तर भी काफी बढ़ा है। बैक्टीरिया के कारण मृत जीवधारियों के सड़ने से उत्पन्न मीथेन गैस की वायुमंडल में सघनता पिछली एक शताब्दी में प्रति वर्ष एक प्रतिशत के हिसाब से बढ़ी है। वायुमण्डल में क्लोरो फ्लोरो कार्बन पदार्थों का घनत्व पांच प्रतिशत सालाना के हिसाब से बढ़ रहा है। ये पदार्थ रेफ्रीजरेटरों में शीतलीकरण के लिए, धुलाई के घुलनशील पदार्थों के रूप में और प्लास्टिक फोक बनाने के लिए कच्चे माल के रूप में काम आते हैं। नाइट्रोजन पर आधारित उर्वरक संयंत्रों से निकली नाइट्रस ऑक्साइड जो कोयला तथा पेट्रोलियम ईंधन जलने से भी पैदा होती है, वायुमण्डल में बढती जा रही है।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

चिंटू, तुम तो दूर ही रहो। तुम तो मेरी घड़ी खराब ही कर दोगे।
देखो, चिंटू कक्षा से बाहर है! मैं घड़ी उसके बस्ते में छिपा दूँगी और टीचर जी को बोलूंगी कि मेरी घड़ी मिल नहीं रही।
इस तरह झूठ बोलना अच्छी बात नहीं है, किट्टी। चिंटू को बहुत डांट पड़ेगी।

तभी तो मज़ा आएगा। जल्दी से घड़ी छिपा देते हैं।
टीचर जी, मेरी नई घड़ी खो गई है। मिल नहीं रही। प्लीज आप सब के बस्ते चैक करवाइए।
बच्चों! सभी अपनी-अपनी कॉपियां किताबें व बस्ते अच्छी तरह देखो। उनमें किट्टी की घड़ी तो नहीं है।

ऐसा कैसे हुआ कि किसी के बस्तें में घड़ी नहीं मिली, अभी-अभी तो मैंने चिंटू के बस्ते में ही रखी थी वो घड़ी।
ये रही तुम्हारी घड़ी। जब तुम मेरे बस्ते में घड़ी छिपा रही थी तब मैंने बाहर से देख लिया था और मैंने निकाल कर तुम्हारे बस्ते में रखी थी।
किट्टी ये गलत बात है। अब तुम दूसरों पर चोरी का झूठा इल्ज़ाम भी लगाने लगी हो। तुम्हें सज़ा भी ज़रूर मिलेगी।
मुझे माफ कर दीजिए, टीचर जी। मैं तो सिर्फ मज़ाक कर रही थी। मैं दोबारा ऐसा नहीं करूँगीं।
तुम्हारी सजा यह है कि तुम कल से स्कूल में घड़ी पहनकर नहीं आओगी।

रोचक जानकारी

प्रस्तुति : डॉ. विनोद गुप्ता

रोमांचक क्रिसमस लाइटिंग

दुनियाभर में क्रिसमस और नववर्ष की तैयारियां एक महीने पूर्व से ही शुरू हो जाती हैं। क्रिसमस पर 'क्रिसमस ट्री' के अलावा क्रिसमस लाइटिंग भी खूब होती है। क्या आप क्रिसमस लाइटिंग के बारे में जानते हैं जो रोमांच पैदा करती है? क्रिसमिस लाइटिंग पर कुछ विश्व रिकॉर्ड भी बने हैं।

गत वर्ष जापान के टोक्यो में 2 लाख 70 हजार एलईडी से डिस्प्ले बनाया गया था। नवम्बर 2015 में बना यह डिस्प्ले 14 फरवरी 2016 तक जगमगाता रहा। इस ऑडियोविजुअल डिस्प्ले में हर छह मिनट पर लाइटों का रंग और थीम बदल जाती थी। इस इंस्टालेशन को देखने के लिए भारी संख्या में लोग इस डिजिटल क्रिसमस पार्क को देखने आए थे।

वर्ष 2014 में केनबरा शहर में एक वकील डेविड रिचर्ड्स और उनकी टीम ने मिलकर लगभग 12 लाख एलईडी लाइट्स से क्रिसमस का पूरा एक नज़ारा बनाया था। केनबरा के मॉल में उन्होंने इन लाखों लाइट्स से स्नोमैन, क्रिसमस गिफ्ट्स सहित कई चीजों को सजाया। इस सजावट को पूरा करने के लिए रिचर्ड्स और उनकी टीम ने 120 किलोमीटर लम्बी केबल का इस्तेमाल किया था। रिचर्ड्स के इस रिकॉर्ड ने उजबेकिस्तान में बनाए गए उस रिकॉर्ड को तोड़ दिया है, जिसमें लगभग दो लाख एलईडी लाइट्स का इस्तेमाल किया गया था। रोशनी का यह मेला नये साल तक चला था। स्थानीय बिजली कम्पनी ने इस शो के लिए निःशुल्क बिजली का प्रबन्ध किया था।

वहीं गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड ने इसकी पुष्टि करते हुए अब तक के सबसे बड़े एलईडी डिस्प्ले रिकॉर्ड का दर्जा दिया था।

ऑस्ट्रेलिया के केनबरा में नवम्बर 2015 में 5,18,838 लाइट्स से जगमग क्रिसमस ट्री बनाया गया था, जिसमें 3,74,280 लाइट्स के जापान के पिछले रिकॉर्ड को तोड़कर गिनीज रिकॉर्ड बनाया गया है।

गतवर्ष यानी 2015 में बेल्जियम के ग्हेंट शहर में क्रिसमस के पूर्व एलईडी लाइट्स फेस्टिवल शुरू हुआ था। नववर्ष की शुरुआत तक यहाँ ऐसी ही रोशनी का नज़ारा दिखाई दिया। खासतौर पर यहाँ की प्रमुख चर्च को एलईडी लाइटों से सजाया गया था, जिसे देखने हजारों पर्यटक आए थे। यहाँ 55 हजार एलईडी लाइट्स लगाई गई थी जिसके मुख्य कलाकार थे ल्यूमीनैटी दि केग्नो। ये रोमांचक रोशनी किसी को भी आकर्षित कर सकती थी।

क्रिसमस की तैयारियां पूरी दुनियाभर में उफान पर रहती हैं। इसी क्रम में पिछले वर्ष 2015 में ब्राजील के स्थानीय फ्रेंच लाइटनिंग डिजाइनर गैरपद डी कारो ने क्राइस्ट द रिडिमर की विशालकाय मूर्ति को अलग–अलग तरह की रोशनियों से जीवंत बना दिया था। ब्राजील के रियो डी जेनेरियो में कोरकोवाडी पहाड़ी पर 130 फीट ऊँची यह मूर्ति दुनियाभर के आकर्षण का केन्द्र है।

पहेलियों के उत्तर

1. विद्या, 2. बाँसुरी, 3. तखत, 4. हीरा, 5. घड़ी, 6. कैरम, 7. टी.वी. 8. कलम।

कौन क्या कहलाता है?

★ 'सात पहाड़ियों' का नगर 'रोम' को कहा जाता है।
★ 'नार्वे' 'अर्द्धरात्रि के सूर्य की चाबी' कहलाता है।
★ 'न्यूयार्क' को 'सिटी ऑफ स्काई स्क्रेपर्स' कहा जाता है।
★ 'जिब्राल्टर' को 'भूमध्य सागर की चाबी' कहा जाता है।
★ 'फिनलैंड' 'हजार झीलों का देश' कहलाता है।
★ 'थाईलैंड' को 'सफेद हाथियों' का देश कहा जाता है।
★ 'भूटान' को 'वज्रपात' का देश कहते हैं।
★ 'स्विट्जरलैंड' को 'यूरोप का स्वर्ग' कहा जाता है।
★ 'क्यूबा' को 'चीनी का कटोरा' कहा जाता है।
★ 'जापान' को 'उगते सूर्य' का देश कहते हैं।
★ 'यरूशलम' को 'पवित्र भूमि' कहा जाता है।

प्रस्तुति : विभा वर्मा

वर्ग पहेली के उत्तर

1 त्रि	पो	2 ली	■	3 चा	4 ची
भु	■	5 ट	न	■	न
6 ज	7 फ	र	■	8 आ	■
■	री	■	9 ब	बू	10 ल
11 बं	द	रि	या	■	ख
■	को	■	12 लि	स्ब	न
13 ए	ट	ल	स	■	ऊ

जानकारी : ईलू रानी

कैसे उड़ान भरते हैं परिन्दे ?

रंग–बिरंगे परिन्दे भी नीलगगन की सुन्दरता में चार चांद लगाते हैं। परिन्दों को आसमान में स्वतंत्र विचरण करते, उड़ान भरते तुमने कई बार देखा होगा, लेकिन तुमने कभी सोचा है– 'आखिर ये उड़ते कैसे हैं?'

आओ, यही कुछ जानते हैं :–

परिन्दों के उड़ने की शक्ति उनके डैनों की बनावट पर निर्भर करती है। प्रत्येक परिन्दे के दो डैने होते हैं। इन डैनों पर पंख उगे रहते हैं। इन पंखों की सहायता से ही ये उड़ते हैं।

परिन्दों के शरीर का ढाँचा भी बहुत मजबूत होता है। साथ ही बहुत हल्का भी। उनकी ज्यादातर हड्डियां खोखली और हवा से भरी होती हैं। हवा भरी रहने के कारण ही इनका वजन हल्का होता है। इसी कारण ज्यादातर पक्षी उड़ पाते हैं, लेकिन परिन्दे कैसे उड़ाने भर सकते हैं, यह उनके डैनों की बनावट पर निर्भर करता है। जो पक्षी तेजी से उड़ते हैं और जिन्हें दूर का सफर तय करना होता है, उनके डैने लम्बे, पतले और नुकीले होते हैं। चौड़े डैनों वाले पक्षी धीमी गति से उड़ते हैं, जो पक्षी सुदूर आकाश में उड़ान भरते हैं, उनके डैने उनके शरीर की तुलना में काफी बड़े होते हैं। पंख फड़फड़ाने वाले छोटे पक्षियों के डैने छोटे होते हैं।

हाँ, जो परिन्दे उड़ने में पूरी तरह समर्थ होते हैं, उनमें भी उड़ने की शक्ति एक जैसी नहीं होती। छोटे पक्षी आमतौर पर 18 से 48

मील प्रति घंटा की रफ्तार से उड़ते हैं।

स्वर्ण जिरिया और बतासी नामक पक्षी 67 मील प्रति घंटा तथा अमरीका बतासी नाम का पक्षी 95 मील प्रति घंटा की रफ्तार से उड़ता है। हवा के रूख का असर उड़ने पर पड़ता है। एक बार इंग्लैंड से आयरलैंड जाती हुई टिटहरियों को हवा उड़ाकर अमरीका ले गयी और उस लम्बे सफर को उन्होंने सिर्फ 12 घंटों में पूरा कर लिया। इसी प्रकार सुदूर देशों की यात्रा करते समय पक्षियों की उड़ने की गति उनकी सामान्य गति से अधिक होती है।

फाख्ता पक्षी 50 से 52 मील प्रति घंटा उड़ता है। कौआ 22 से 28, खंजन 24 से 28, बुगला 20 से 24, अबाबील 40 से 45 तथा उल्लू 45 से 55 किलोमीटर प्रति घंटा की गति से उड़ान भरता है।

कई बार मौसम का असर भी परिन्दों की उड़ान में फेरबदल कर देता है। वर्षा के मौसम में पंखों में नमी होने के कारण हर पक्षी अपनी प्रति घंटा उड़ान से 5 से 8 किलोमीटर कम ही उड़ पाता है। प्रचंड गर्मी में भी इनके पंखों की उड़ान थकान के कारण 4 से 8 किलोमीटर तक कम हो जाती है, लेकिन सर्दी व बसंत के मौसम में तमाम परिन्दे खुश होकर दूर–दूर तक की उड़ान भरते हैं।

वैज्ञानिक जानकारी : डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

प्रश्न : लकड़ी का कोयला (चारकोल) लकड़ी से अधिक उत्तम ईंधन क्यों माना जाता है?

उत्तर : चारकोल को लकड़ी से श्रेष्ठ ईंधन माना जाता है। चारकोल का कैलोरीमान लकड़ी की अपेक्षा अधिक होता है। वायु की अनुपस्थिति में जलकर चारकोल धुआँ नहीं देता और यह लकड़ी की अपेक्षा दुगुनी ऊष्मा प्रदान करता है। अतः चारकोल को उत्तम ईंधन माना जाता है।

प्रश्न : वाशिंग पाउडर शुष्क क्यों रहते हैं?

उत्तर : वाशिंग पाउडरों में उनके कुल भार का लगभग 15–30% भाग अपमार्जक तथा बाकी हिस्सा अन्य रसायनों से मिलकर बना होता है जो वाशिंग पाउडर को मनचाहा गुण प्रदान करते हैं। वाशिंग पाउडर में अपमार्जक व अन्य रसायनों के अतिरिक्त सोडियम सल्फेट एवं सोडियम सिलिकेट भी मिलाए जाते हैं। ये वाशिंग पाउडर को शुष्क बना देते हैं।

प्रश्न : पॉलिश करने पर जूते क्यों चमक जाते हैं?

उत्तर : दरअसल, चमड़े में बहुत से छोटे–छोटे अनेक छिद्र होते हैं जिससे चमड़े की बाहरी सतह खुरदरी हो जाती है। पॉलिश करने से ये छिद्र भर जाते हैं और एक समान व पतली परत–सी बन जाती है। इसी कारण ब्रुश करने से रगड़ने पर जूतों में चमक उत्पन्न हो जाती है।

प्रश्न : उबलते हुए दूध में फूंक मारने पर वह नीचे क्यों बैठ जाता है?

उत्तर : जब दूध को गर्म किया जाता है तो दूध पर झाग की एक परत बन जाती है। साथ ही साथ गर्म होने से दूध में पानी की भाप भी बनती है जो ऊपर की ओर उठने का प्रयास करती है। यह भाप जब दूध के ऊपर की परत से टकराती है तो दूध उफनने लगता है। किंतु, दूध में जोर से फूंक मारने पर दूध की ऊपरी परत फट जाती है और पानी की भाप बाहर निकल जाती है। परिणामस्वरूप, दूध नीचे की ओर बैठ जाता है।

कविता : प्रियंका भारद्धाज

साफ करो अपना घर आंगन

सबसे पहले साफ करो तुम,
अपना घर, अपना आंगन।
फिर करना तुम साफ ध्यान से,
खुद अपना तन, अपना मन।।

निकलो घर से बाहर तुम,
तब देखना गली अपनी।
साफ यदि होगी वह खूब,
दिखेगी खुद भली कितनी।।

आगे ही है अपना स्कूल,
उसे न जाना तुम भूल।
फूलों से बच्चे हो तुम,
रोपो वहाँ भी प्यारे फूल।।

अपने स्कूल की सफाई,
जिसमें छिपी हुई है भलाई।
गंदगी के रहते सुनो,
हो नहीं सकती पढ़ाई।।

पढ़ो और हँसो

अध्यापक : चिंटू तुम कल स्कूल क्यों नहीं आए?

चिंटू : सर, कल मैं सपने में अमरीका चला गया था।

अध्यापक : ठीक है! पिंटू तुम क्यों नहीं आए?

पिंटू : सर मैं चिंटू को एयरपोर्ट छोड़ने गया था।

– सलू तनेजा (शाहाबाद)

पिताजी : (पुत्र से) आज का प्रश्न–पत्र कैसा था?

पुत्र : पापा, गुलाबी रंग का था।

★ ★ ★

डॉक्टर : (मरीज से) गहरी सांस लो और तीन बार सात बोलो।

मरीज : (गहरी सांस लेकर) इक्कीस।

★ ★ ★

एक चींटी तेजी से दौड़ती हुई अस्पताल की ओर जा रही थी।

दूसरी चींटी ने पूछा– बहन! इतनी तेजी से कहाँ भागी जा रही हो?

पहली चींटी बोली– हाथी दादा का 'एक्सीडेण्ट' हो गया है उसे खून की जरूरत है। खून देने जा रही हूँ।

– प्रतीक्षा कुशवाहा (इटावा)

चाची : अरे बेटा, कहाँ जा रहे हो?

दिनेश : एक साधु महाराज का प्रवचन सुनने।

चाची : ना बादल है ना बरसात फिर ये छाता क्यों?

दिनेश : साधु महाराज वहाँ ज्ञान की वर्षा करने वाले हैं।

– आरती अग्रवाल (खलीलाबाद)

★ ★ ★

एक बार एक हाथी जंगल से गुजर रहा था तो सब चूहे अपने–अपने बिलों में घुस गये परन्तु एक चूहा अपने पैर बाहर निकाले हुए था।

दूसरे चूहे ने उससे पूछा – तुमने अपना पैर बाहर क्यों निकाल रखा है।

पहला चूहा बोला – जब हाथी मेरे पास आयेगा तो मैं हाथी को अपने पैर से अड़ंगी मारकर गिरा दूँगा।

★ ★ ★

एक बार एक व्यक्ति को चुनाव में खड़ा किया गया। वह एक चुनाव सभा में भाषण देने पहुँचा तो वह बोला – भाइयों! मैं खड़ा हूँ।

तब एक व्यक्ति ने कहा – आप खड़े क्यों हैं बैठिये।

– अजित कुमार (सिरोड़)

एक अपराधी को फाँसी पर लटकाने से पहले जेलर ने उसकी अन्तिम इच्छा पूछी तो अपराधी बोला– मुझे आम खाने हैं।

जेलर : वो अभी नहीं मिलेगें। वह तो 6 महीने बाद मिलेंगे।

अपराधी : तो मैं 6 महीने तक इन्तजार कर लूंगा।

★ ★ ★

लाली : (मोना से) जरा ये तार पकड़ना।

मोना : (झटका लगने पर) लाली इसमें तो करण्ट है।

लाली : ठीक है मोना मुझे यही मालूम करना था।

★ ★ ★

सुनीता : डॉक्टर ने मेरी तबियत ठीक होने के लिए मुझे लंदन या स्विटजरलैंड जाने को बोला है। आप बताओ कहाँ चलना है?

राजेश : चलो अब।

सुनीता : कहाँ?

राजेश : दूसरे डॉक्टर के पास।

★ ★ ★

टीचर ने परीक्षा में चार पेज का निबन्ध लिखने को दिया। विषय था– आलस्य क्या है?

एक स्टूडेंट ने तीन पेज खाली छोड़कर चौथे पेज पर बड़े–बड़े अक्षरों में लिखा– यही आलस्य है।

★ ★ ★

राजेश : माँ आज दौड़ प्रतियोगिता हुई थी। मैं द्वितीय आया हूँ।

मां : बेटा कितने प्रतियोगी थे।

राजेश : दो

★ ★ ★

शादी की पार्टी में एक आदमी बहुत देर से खाना खा रहा था। किसी ने पूछा कितना खाओगे?

वह बोला : मैं भी खाते–खाते परेशान हो गया लेकिन क्या करूं कार्ड में लिखा है खाना खाने का समय 7 से 10 बजे तक।

★ ★ ★

रेलगाड़ी में यात्रा कर रहे एक लालची व्यक्ति के पास बैठी औरत का बेटा आईसक्रीम नहीं खा रहा था।

औरत ने उसे 4–5 बार कहा, आइसक्रीम खा लो नहीं तो मैं तुम्हारी आइसक्रीम इनको दे दूंगी।

औरत ने ऐसा बार–बार कहा तो वह व्यक्ति झल्लाकर बोला– मैडम, जल्दी फैसला कर लो, आइसक्रीम के चक्कर में मैं एक स्टेशन आगे आ गया हूँ।

– गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

जन्म दिन मुबारक

समीप (दिल्ली)

अचिंत (मुंड़िया)

गरिमा (रेवाड़ी)

उदय (दिल्ली)

अवन्तिका (झांसी)

आदित्य (नालासोपारा)

मिंताश (सूरत)

कनव (सनौरा)

दक्ष (चरामा)

अंशिका (वडोदरा)

शुभि (नैनी)

वंश (दिल्ली)

हर्ष (खरड़)

शोभित (खरड़)

अनिश (मुंबई)

उपासना (जालन्धर)

आराध्या (पानीपत)

नमन (दिल्ली)

अमनचैन (27–ए)

निलेश (पटियाला)

तनिशा (वाशी)

पुलकित (नवापारा)

हीमेश (काटोल)

प्रभदीप (मोगा)

काश्व (दिल्ली)

दिव्य (नैनी)

पल्वी (पंडोरी सूमलां)

कोमल (नांगलोई)

मानसी (नांगलोई)

इस स्तम्भ के अन्तर्गत 10 वर्ष तक की आयु के बच्चों के फोटो भेज सकते हैं। जिस माह में बच्चे का जन्म दिन हो, उससे दो माह पूर्व केवल पासपोर्ट साइज का फोटो इस पते पर भेजें।

सम्पादक, हँसती दुनिया,
पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्पलेक्स,
निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9

फोटो के पीछे यह कूपनं चिपकाना अनिवार्य है।

नाम.....जन्म माह.....वर्ष.....

पता .....

.....

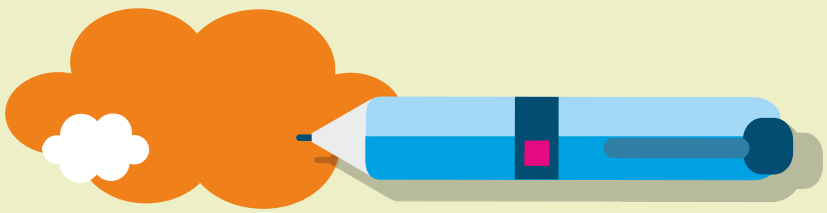

आपके पत्र मिले

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। मुझे एवं मेरे परिवार के बच्चों को हँसती दुनिया बहुत पसन्द है। इस पत्रिका का हमें बेसबरी से इन्तजार रहता है।

अगस्त अंक में डॉ. दिनेश चमोला द्वारा रचित कविता 'प्यारा–प्यारा अपना देश' और सितम्बर अंक में 'बेटी' शीर्षक से डॉ. परशुराम शुक्ल द्वारा रचित कविता बहुत अच्छी लगी।

कहानियों में 'राखी का रंग' (डॉ. दर्शन सिंह 'आशट') एवं 'मातृभूमि से प्रेम' (रूपनारायण काबरा) कहानियां पसन्द आईं।

– रामाश्रय साह (दलसिंह सराय)

मैं हँसती दुनिया का आजीवन सदस्य हूँ। मुझे हँसती दुनिया बहुत अच्छी लगती है। मैं हर महीने हँसती दुनिया के आने का बेसबरी से इन्तजार करता हूँ।

– श्याम बिल्दानी (बड़नेरा)

हँसती दुनिया वास्तव में बच्चों के लिए ज्ञानवर्द्धक एवं मनोरंजक पत्रिका है। प्रतिमाह सभी बच्चे इसके नये अंक का बेसबरी से इंतजार करते हैं। 'चित्रकथाएं' भी रोचक रहती हैं। 'कविताएं' भी सरल व सुन्दर रहती हैं। कुल मिलाकर पत्रिका के प्रत्येक पृष्ठ से आपका चुस्त सम्पादन झलकता है।

आज के इस व्यवसायिक युग में हँसती दुनिया का पाठक बनना अपने परिवार को स्वस्थ मनोरंजन का न्यौता देने जैसा ही है। मुझे प्रसन्नता है कि मैं आपकी पत्रिका का सदस्य हूँ।

– कमल नागपाल (खण्डवा)

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। मुझे हँसती दुनिया बहुत अच्छी लगती है। मैंने सितम्बर माह की हँसती दुनिया पढ़ी। मुझे इसमें कहानियां 'संगठन में शक्ति है' और 'लालच' बहुत अच्छी लगीं। कविताओं में 'धरती देती सब कुछ' (हरजीत निषाद) एवं 'झाड़ू का उपहार' (राधेलाल 'नवचक्र') पसन्द आईं। सभी प्रेरक–प्रसंग और स्तम्भ रोचक थे।

लेख 'हेलीकॉप्टर की कहानी' एवं 'दुनिया बदल देने वाला आविष्कार' अच्छे लगे।

– शोभित सक्सेना (बसरेहर)

समय

बच्चो! समय पर दो तुम ध्यान।
समय की करो सदा पहचान।
समय पर पढ़ना, समय पर खेलना।
समय का दुरुपयोग कभी मत करना।
जैसे घड़ी का काम है समय दिखलाना।
वैसे तुम्हारा काम है समय का महत्व करना।
अगर समय का सदुपयोग किए तुम एक समान।
तो दुनिया में बन जाओगे महान।

– संदीप कुमार (बोकाने कलां)

अक्टूबर अंक का रंग भरो परिणाम

प्रथम :

भव्यम
आयु 10 वर्ष
20, महाराजा यादविन्द्रा एन्कलेव,
नाभा रोड, पटियाला (पंजाब)

द्वितीय :

अक्षित गुप्ता
आयु 12 वर्ष
सत्या गारमेंटस, अपर बाजार,
सुबाथु, जिला : सोलन (हि.प्र.)

तृतीय :

सुदीक्षा राठौर
आयु 9 वर्ष
ग्राम : कवईया, पोस्ट : श्रीपुर कवईया,
जिला : पूर्वी चम्पारण (बिहार)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

हिमांशु, पार्थ सेठी (शिवाजी नगर, गुरुग्राम), जमुना निरंकारी (4 के.एस.पी., टिब्बी), आयशा (अशोक नगर, दिल्ली), दक्ष पंजवानी (चारामा), निहारिका, सुकृति (विशाल नगर, रायपुर), प्रकृति कश्यप, चंचल चिच्चड़ (रविग्राम, रायपुर), कृष्णकांत राजपूत (गाँधी नगर, कन्नौज), प्रियांशु (गंगोली), जन्नत (झड़ोदा, दिल्ली), खुशी कुमारी (राजपुर, खुर्द), समिता (रामा मंडी, जालन्धर), आरती (धारी घाट), भूमिका कुमारी(मोहाली), पलक (चण्डीगढ़), चरनजीत (सतनामपुरा, फगवाड़ा), दीप्ति (चण्डीगढ़), निष्ठा (राजा पार्क, जयपुर), प्रेमप्रकाश (बस्ती), सिमरन, विवेक (फगवाड़ा), यवनिका (भरमोटी कलां), दिशा (विकास विहार, रायपुर), आरती (भटिण्डा), मोहित (अमन नगर, लुधियाना), हिमेश (इन्दिरा कॉलोनी, बिलासपुर), सिमरन (अल्मोड़ा), अनमोल (पठानकोट)।

दिसम्बर अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भरकर **20 दिसम्बर** तक कार्यालय **'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–110009** को भेज दें।

तीन सर्वश्रेष्ठ चित्रों (प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय) के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) **फरवरी 2017** अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।

चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेजें।

रंग भरो

नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

चित्र बनाकर रंग भरो

प्रस्तुति : चाँद मोहम्मद घोसी

प्रिय मित्रों, 2 का पहाड़ा बोलते हुए नीचे के बिंदुओ को क्रमवार मिलाकर सुन्दर चिड़िया का चित्र बनाओ और फिर उसे सुंदर रंगों से सजाओ।

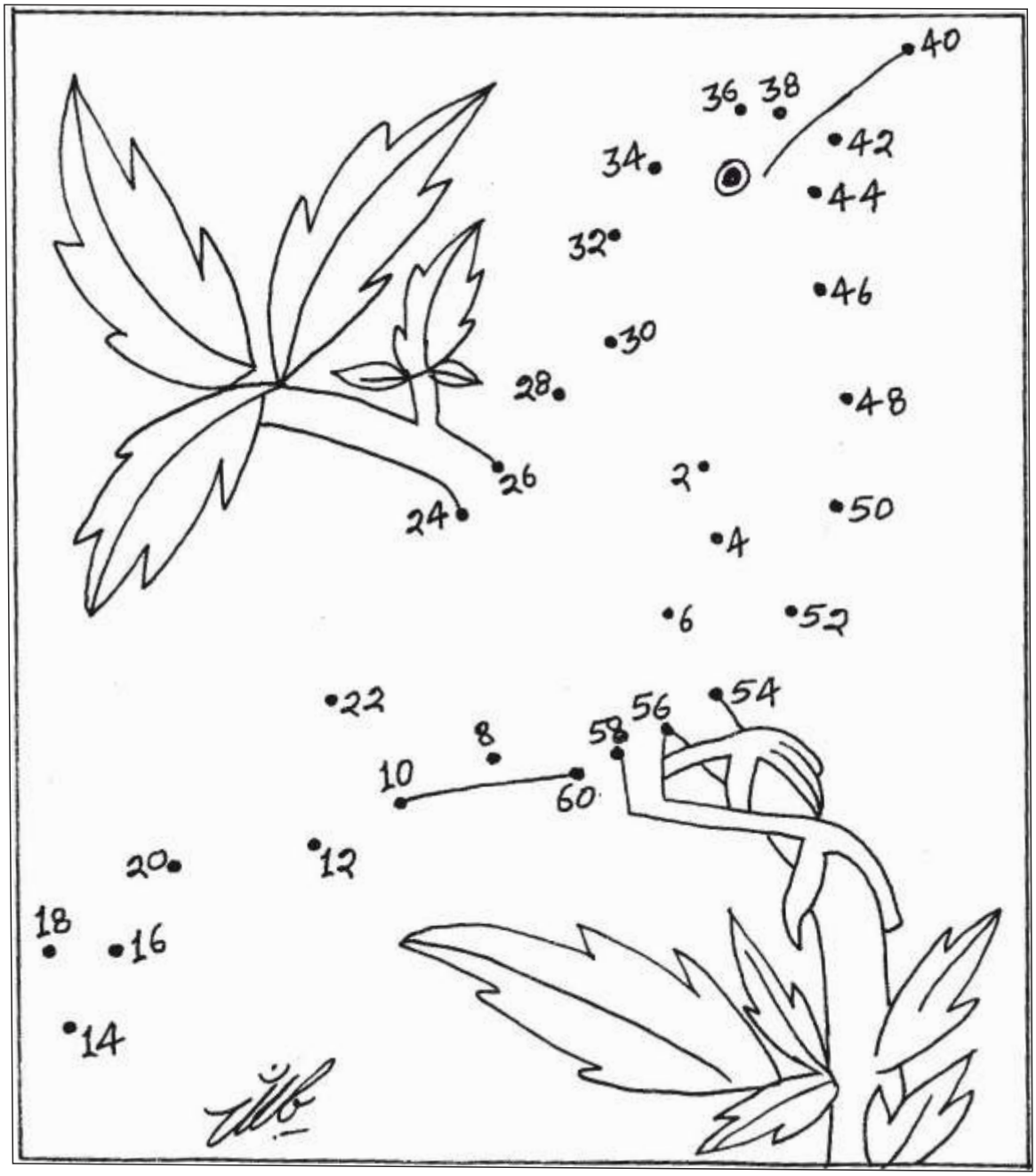

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं!

सन्त निरंकारी
(ग्यारह भाषाओं में)

एक नज़र
(तीन भाषाओं में)

हँसती दुनिया
(चार भाषाओं में)

'सन्त निरंकारी', 'हँसती दुनिया' (हिन्दी, पंजाबी व अंग्रेजी) एवं 'एक नज़र' (हिन्दी/पंजाबी) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें
पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009
011–47660200, E-mail : patrika@nirankari.org

सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र (मराठी) व सन्त निरंकारी (नेपाली) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

Sant Nirankari Satsang Bhawan
1st Floor, 50, Morbag Road, Naigaon, Dadar (E) MUMBAI-400 014 (Mah.)
e-mail : chandunirankari@yahoo.com & marathi@nirankari.org

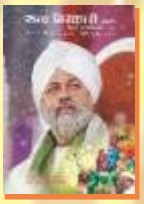

अन्य भाषाओं की पत्रिकाओं की सदस्यता के लिए निम्नानुसार सम्पर्क करें

TAMIL
Sant Nirankari Satsang Bhawan, #7, Govindan Street, Ayavoo Naidu Colony, Aminji Karai, CHENNAI-600 029 (T.N.)
Ph. 044-23740830

ORIYA
Sant Nirankari Satsang Bhawan, Kazidiha, Post Madhupatna, CUTTACK-753 010 (Orissa)
Ph. 0671-2341250

TELUGU
Sant Nirankari Satsang Bhawan, No. 6-2-970, Khairtabad, HYDERABAD-Pin : 500 029
Ph. 0104-23317879

GUJRATI
Sant Nirankari Satsang Bhawan, 31, Pratapganj, VADODARA-390002 (Guj.)
Ph. 0285-275068

KANNADA
Sant Nirankari Satsang Bhawan, 88, Rattanvillas Road, Southend Circle, Basavangudi, BELGURU-560 004 (Karnataka)
Ph. 080-26577212

BANGLA
Sant Nirankari Satsang Bhawan, 1-D, Nazar Ali Lane, Near Beck Bagan, KOLKATA-700 019
Ph. 033-22871658

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Registered with the Registrar of Newspaper For India Under RNI No. 25672/73 : : :
Delhi Postal Regd. No. DL-(N)-01/0136/2015-17
Licence No. U (DN)-23/2015-17
Licenced to post without Pre-payment

Posted at IMBC/1 Prescribed dates 21th & 22nd. Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)